वर्ष-15, अंक-09 वि.सं. 2076, युगाब्द 5121 नवम्बर 2019 मूल्य : 20.00
सदस्यता शुल्क : संरक्षक : रु. 5000/- आजीवन : रु. 2000/- वार्षिक : रु. 200/-

मासिक पत्रिका

सेवा संवाद

वेदों में पर्यावरण : चिंतन-चिंता-चेतावनी

सबका साथ, सबका विकास, सबका विश्वास

प्रदेश में मूल्य समर्थन योजना के अन्तर्गत सरकारी धान की खरीद

धान खरीद
वर्ष 2019-20

पंजीयन करायें – समर्थन मूल्य का लाभ उठायें

कृषक बन्धु खाद्य विभाग के पोर्टल fcs.up.gov.in पर पंजीयन करायें

पहली बार इस वर्ष बटाईदारों/अनुबन्ध पर खेती करने वाले किसानों से भी धान की खरीद की जायेगी ।

पहली बार पूर्णतया कम्प्यूटरीकृत प्रणाली के तहत पारदर्शी धान खरीद की व्यवस्था ।

धान के मूल्य का भुगतान सीधे किसानों के बैंक खाते में 72 घंटे के अंदर किया जायेगा ।

धान का समर्थन मूल्य धान कॉमन रू. 1815/- प्रति कुन्तल एवं ग्रेड 'ए' रू. 1835/- प्रति कुन्तल है ।

- किसान भाईयों से अपील है कि अपना धान अच्छी तरह सुखाकर, साफ करके धान खरीद केन्द्र पर लायें और साथ में जोत बही/खाता नम्बर अंकित कम्प्यूटराईज्ड सत्यापित खतौनी, आधार कार्ड अथवा फोटो युक्त पहचान–पत्र एवं बैंक पास बुक के प्रथम पृष्ठ की छायाप्रति अवश्य लायें।
- किसान भाई अपना बैंक खाता राष्ट्रीयकृत/ अनुसूचित बैंक में खुलवायें।
- इस वर्ष बटाईदार एवं अनुबंध पर खेती करने वाले किसान भाइयों से भी धान खरीद की जायेगी, जिसके लिए उन्हें सहमति पत्र /अनुबन्ध पत्र प्रस्तुत करना होगा।
- क्रय केन्द्रों पर धान की उतराई, छनाई व सफाई में आने वाला व्यय कृषक द्वारा वहन किया जायेगा, जिसका भुगतान रू0 20/- प्रति कुन्तल की दर से सीधे उनके बैंक एकाउण्ट में खरीद मूल्य के साथ क्रय एजेन्सी द्वारा किया जायेगा।
- मंगलवार और शुक्रवार लघु एवं सीमांत कृषकों से धान क्रय हेतु आरक्षित।
- धान खरीद केन्द्र प्रतिदिन प्रातः 9:00 बजे से सायं 5:00 बजे तक खुले रहेंगे (रविवार एवं राजपत्रित अवकाश को छोड़कर)।

धान क्रय की अवधि		
पश्चिमी उत्तर प्रदेश	दिनांक 01.10.2019 से 31.01.2020 तक	लखनऊ सम्भाग (जनपद हरदोई, सीतापुर, लखीमपुर) तथा बरेली, मुरादाबाद, मेरठ, सहारनपुर, आगरा, अलीगढ़ एवं झाँसी मण्डल
पूर्वी उत्तर प्रदेश	दिनांक 01.11.2019 से 29.02.2020 तक	लखनऊ सम्भाग (जनपद लखनऊ, रायबरेली, उन्नाव) तथा चित्रकूट, कानपुर, अयोध्या, देवीपाटन, बस्ती, गोरखपुर, आजमगढ़, वाराणसी, मिर्जापुर एवं प्रयागराज मण्डल

किसी तरह की कठिनाई होने पर किसान भाई अपनी शिकायत जिला खाद्य विपणन अधिकारी, उपजिलाधिकारी तथा लखनऊ स्थित खाद्य नियंत्रण कक्ष के दूरभाष संख्या 0522-2288906 अथवा टोल–फ्री नम्बर 18001800150 पर कर सकते हैं।

उच्च गुणवत्ता वाले हेलमेट का ही उपयोग करें।

खाद्य एवं रसद विभाग उत्तर प्रदेश

भाऊराव देवरस सेवा न्यास द्वारा प्रकाशित मासिक पत्र

सेवा संवाद

वर्ष-15, अंक-09 | वि.सं. 2076, युगाब्द 5121 | नवम्बर 2019 | मूल्य : 20.00

सदस्यता शुल्क : संरक्षक : रु. 5000/- आजीवन : रु. 2000/- वार्षिक : रु. 200/-

मार्गदर्शक

डॉ0 अवधेश प्रसाद सिंह
अध्यक्ष

डॉ0 देवेन्द्र प्रताप सिंह
सचिव

राहुल सिंह
सहसचिव

ब्रह्मदेव शर्मा
संस्थापक न्यासी

सम्पादक
डॉ. शिवभूषण त्रिपाठी
मो. 09451176775

सह सम्पादक
राजेश
मो. 09793120738

प्रबन्धक
विजय अग्रवाल
मो. 9415020996

मुद्रक एवं प्रकाशक
जितेन्द्र कुमार अग्रवाल
मो. 9415003111

कार्यालय : भाऊराव देवरस सेवा न्यास
सी-91, निरालानगर, लखनऊ (उ.प्र.) 226020
दूरभाष : 0522-4001837, 2789406
Email : sewasamwad@gmail.com

आलोक : *प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार लेखकों के निजी विचार हैं।*
प्रकाशक एवं सम्पादक का उससे सहमत होना आवश्यक नहीं है।

सहयोग राशि नकद अथवा चेक/बैंक ड्राफ्ट द्वारा 'सेवा संवाद (भाऊराव देवरस सेवा न्यास)' के पक्ष में जो लखनऊ में देय हो, भेजने की कृपा करें अथवा हमारे बैंक ऑफ इण्डिया, निराला नगर, लखनऊ (IFSC : BKID0006806) के खाता संख्या 680610110000102 में जमा/अन्तरित करा कर कार्यालय पते पर सूचित करने की कृपा करें।

इस अंक में

1.	अपनी बात	डॉ. शिवभूषण त्रिपाठी	5
2.	आत्मावलोकन "ग्राम स्वराज"	राजेश	6
3.	महायज्ञ का अंकुरार्पणम्	समाचार	7
4.	वेदों में पर्यावरण चिंतन–चिंता–चेतावनी	प्रो0 श्रीराम अग्रवाल	8
5.	फल–सब्जियां खाएं, नहीं होगा एनीमिया	समाचार	11
6.	हिन्दु धर्म ही सही अर्थ में मानव धर्म	समाचार	12
7.	देव संस्कृति भाग्यवादी नहीं कर्मवादी	संकलन	14
8.	देश में संघ कार्य का निरंतर विस्तार हो रहा है	डॉ. मनमोहन वैद्य	16
9.	मधुमेह रोगी साल में एक बार जरूर कराएं आँखों की जांच	डॉ. शोभित चावला	18
10.	स्वयंसेवक देशभर में डेढ़ लाख से अधिक सेवा प्रकल्प	भय्याजी जोशी	19
11.	प्रसाद भवन	समाचार	22
12.	बच्चे बोले रोज बचाएंगे एक लीटर पानी	समाचार	23
13.	पानी बचाने के लिए अब 'भूजल दोहन पर वार' मुहिम	समाचार	24
14.	एक संक्रामक मुस्कान	प्रवीण झा	24
15.	बीमारी से बचाना है तो बच्चों को मोबाइल और टीवी	समाचार	25
16.	भा0दे0से0 न्यास द्वारा "पं. प्रताप नारायण मिश्र स्मृति.... 2019	समाचार	30
17.	निःशुल्क अस्पताल खोलने के लिए बेचनी पड़ी सब्जियां	सुभाषिनी मिस्त्री	31
18.	गांधी की खादी को दे दिए "उमंग" भरे नए रंग	समाचार	32
19.	गांधी : चंपारण की लखनऊ कथा	डा0 तुमुल विजय शास्त्री	34
20.	गोरक्षासन आंखों और गले के लिए लाभदायक	शुभी	35
21.	26 वाँ पुश्प भाऊराव देवरस स्मृति व्याख्यानमाला सम्पन्न	समाचार	36
22.	लद्दाख आएं, प्लास्टिक न लाएं और अच्छी यादें लेकर जाएं	विवेक सिंह	38

जो मनुष्य क्रोधी पर क्रोध नहीं, क्षमा करता है, वह अपनी और क्रोध करने वाले की महा संकट से रक्षा करता है। वह दोनों का रोग दूर करने वाला चिकित्सक है।

महर्षि वेद व्यास

अपनी बात

'तमसो मा ज्योतिर्गमय' इस प्रार्थना के साथ दीपावली का पर्व सम्पन्न हुआ। बुराइयों का रावण दहन कर अनेक अच्छे संकल्पों के साथ जीवन रथ आगे बढ़ाने का मन बना। वर्षानुवर्ष परम्पराओं की ढोल पीटते हुए समय बीतता रहता कभी गम्भीरता से अपने अन्दर झांककर देखने का प्रयास न करता। आज अचानक स्वयं पर दृष्टि पड़ी तो लगा कि आज भी हम लोभ की पराकाष्ठा और मोह के प्रबल बन्धन में इतने जकड़े हुए हैं कि स्वार्थों की संकुचित सीमा से ऊपर नहीं उठ पाते। विश्वबन्धुत्व तो दूर रहे परिवार की सीमा को भी हमने पति–पत्नी तक सीमित, संकुचित कर लिया है। छल–कपट, झूठ, धोखा, अनाचार, दुराचार आदि अच्छे–बुरे कार्यों को करते हुए अपने बच्चों की बेहतरी में जीवन पर्यन्त लगे रहते हैं और एक दिन ऐसा आता है कि बच्चे एक ऐसी ऊँचाई पर होते हैं जहाँ से झुककर, मुड़कर अपने ही बूढ़े मां बाप को नहीं देख पाते और हम वृद्ध माता–पिता बच्चों की छाया से दूर अकेले घर मकान आदि की चौकीदारी करते हुए नाती पोते–पोतियों के प्यार से वंचित, रूग्णावस्था में आस्था जैसे अस्पतालों में अपनों से दूर नर्स, डॉक्टर की देखरेख में असहाय जीवन बिताने को मजबूर रहते, इस तरह जिन्दगी के अन्तिम सांस की प्रतीक्षा करते हुए एक–एक दिन गिनते रहते। सब कुछ होते हुए भी पर कटे पक्षी की भांति सिमट कर रह जाते। मन ही मन तमाम अंतर्विरोधों का सामना करते रहते, अर्थ लोभ इतना बढ़ जाता कि स्वयं की चिकित्सा आदि पर व्यय होना भी दुःख का कारण बन जाता, पागलों की भांति कभी–कभी बड़बड़ाते, कभी रुदन और कभी मौन की स्थिति, शिथिल इन्द्रियां भी मानो ताने मारती हुई कहतीं–**'अब पछताये होत क्या, जब चिड़िया चुग गई खेत'** जैसी स्थिति हो जाती, जीवन लीला समाप्त हो जाती। अस्तु जीवन लीला समाप्त होने से पूर्व क्यों न हम अपने सद्कर्मो का बैंक बैलेंस बढ़ा लें। हमारे चारों ओर बहुत सारे लोग विद्यमान हैं। जो हमें प्रतिपल सजग और सचेष्ट करते रहते हैं। सेवा का अवसर प्रदान करते रहते हैं।

कदाचित हम जीवन के यथार्थ को समझ पाते, स्व की संकुचित सीमा का विस्तार कर पाते, लोभ और मोह आदि बुराइयों को कम कर पाते, अपने पुत्र–पौत्रियों के अतिरिक्त दूसरों को भी प्यार दे पाते, परिवार की सीमा बढ़ा पाते, प्रकृति से नैकट्य स्थापित कर पाते, प्रकृति संरक्षण में अपना कुछ योगदान कर पाते। ऐसी सेवा संस्थानों को जो दिन–रात लोक कल्याण के कार्यों में लगे हैं उनका कुछ सहयोग कर पाते, स्वयं के आचरण को बदल कर नैतिकता के मार्ग पर चलने की दिशा में कदम बढ़ा पाते, अपने कथनी–करनी में अन्तर समाप्त कर सहज और यथार्थ जीवन जीने का संकल्प और अभ्यास कर पाते तो शायद हम असहाय और मजबूर न होते। सद्कर्मो का बैक बैलेस सदैव हमारे साथ होता। कबीर की भांति इस नश्वर शरीर के त्याग में हमें कभी कोई कष्ट न होता।

❑ शिव

ग्राम स्वराज

भारत 6.5 लाख गाँव का देश है, भारत की आत्मा गाँवों में बसती है, अन्नदाता किसान हो अथवा कामगार सभी अपनी मेहनत कश स्वभाव से देश ही नहीं दुनिया की प्रेरणा का केन्द्र रहा है। इसकी मिसाल भारत के दूसरे प्रधानमंत्री लाल बहादुर शास्त्री के उस आवाह्न की मिसाल को आज भी नकारने की स्थिति में कोई नही है। जब जय जवान–जय किसान का नारा भारतीयों का जयघोष का उद्घोष बन गया था।

गांधी ने ग्राम स्वराज की कल्पना की थी। उनका मानना था कि भारत गांवों का देश है और गांवों को सशक्त बनाए बिना एक ताकतवर राष्ट्र का निर्माण सम्भव नहीं है। उनके विचार में ग्राम स्वराज की पहली शर्त थी शिक्षा का प्रसार।

1917 में गांधी जी चम्पारण आए थे। आए नहीं, बुलाए गये थे। पंडित राजकुमार शुक्त ने चम्पारण में निलहों के आतंक से त्रस्त किसानों की दयनीय हालात का मुआयना करने और उससे मुक्ति दिलाने के लिए बार बार जिद कर गांधी को चम्पारण आने के लिए मजबूर कर दिया था। अपने चम्पारण आगमन के बाद गांधी जी ने वहां के गाँवों का भ्रमण शुरू किया। निलहों के शोषण और अत्याचार को नजदीक से देखा और देखी चम्पारण के किसानों जलालत भरी जिन्दगी। तब उन्होंने सुना कि गाँव की गरीब महिलाएं इसलिए प्रतिदिन नहीं स्नान करती कि उसके पास बदलने के लिए कपड़े नहीं हैं। यह सुन गाँधी का हृदय विदीर्ण हो गया था। उन्होंने देखा दो पैसे, चार की रोजाना मजदूरी पर छोटे–छोटे फटेहाल बच्चों को निलहों और जमींदारो के खेत में मजदूरी करते हुए। कांप उठे थे राष्ट्रपिता वह दृश्य देख कर। बाद में उन्होंने अपनी आत्मकथा 'सत्य के प्रयोग' में लिखा–'जैसे–जैसे मैं अनुभव प्राप्त करता गया, वैसे–वैसे मुझे दिखाई दिया कि मां–बाप दो–तीन पैसे की आमदनी के लिए उनसे पूरा दिन नील के खेतों में मजदूरी करवाते थे। साथियों से वह विचार–विमर्श करके पहले तो छः गाँवों में पाठशाला खोलने का निश्चय हुआ। शर्त यह थी कि उन गाँवों के मुखिया मकान और शिक्षक का भोजन व्यय दें। उनके और खर्च हम चलाएं। उन गाँवों में पैसे की अधिकता थी नहीं पर अनाज आदि लोग दे सकते थे। लोग कच्चा अनाज देने को तैयार हो गये।

गाँधी के ग्राम स्वराज की अवधारणा में नीति निर्माण के दौरान सभी हितधारकों को शामिल किए जाने की बात है। गाँधी की ये संकल्पना समकालीन ग्रामीण भारत में सामाजिक–राजनीतिक बदलाव का माध्यम बनने और इसके सूत्रपात के प्रति आश्वस्त करती है।

महात्मा गांधी के मुताबिक स्वराज का मतलब स्व–राज और आत्म–संयम है ना कि सभी तरह के संयम से आजादी गांधी जी का दृढ़ मत था कि वास्तविक स्वराज सिर्फ कुछ लोगों के अधिकार हासिल करने से नहीं आएगा।

गांधी का मत था कि स्वराज तभी आ सकता है, जब अधिकारों के दुरुपयोग होने पर इसके विरोध की क्षमता की जाए। आसान शब्दों में स्वराज हासिल करने के लिए जनसाधारण का सशक्त होना जरूरी है। उन्हें अधिकारियों को नियंत्रित करने की समझ होनी चाहिए।

गांवों में स्वराज का व्यापक अर्थ है, क्योंकि गांधी जी का मानना था कि भारत की आत्मा गांवों में बसती है। वास्तव में गांधी की सोच के केन्द्र में हमेशा गांव ही थे। इसमें भारतीय सामाजिक और राजनीतिक संस्थाएँ भी शामिल हैं।

गांधी की कल्पना के ग्राम–स्वराज का

शाब्दिक अर्थ गांव का अपना शासन था। इसमें एक गांव का पूरी तरह गणतंत्र, और अपनी जरूरतों के लिए पड़ोसियों से स्वतंत्र होना शामिल है।

हालांकि, इसके बावजूद, गांधी जहाँ निर्भरता अनिवार्य हो, ऐसी कई अन्य जरूरतों के लिए गावों का एक–दूसरे पर निर्भर होने के पक्ष में थे।

गांधी जी ने महसूस किया था कि राष्ट्रीय स्तर पर स्वराज के लिए ग्राम स्वराज पहली जरूरत है। 1942 में लिखे एक आलेख में गांधी जी लिखते हैं। आर्थिक और राजनीतिक ताकतों के एक जगह जमा होने से स्वराज के बुनियादी सिद्धांतों के उल्लंघन का खतरा है।

इनकी रक्षा की जा सकती है। जब गांवों को सशक्त कर विकेन्द्रीकरण का प्रचार किया जाए। गांव विकेन्द्रीकृत सिस्टम की सबसे छोटी इकाई है। इसलिए, राजनीतिक रूप से गांव को इतना छोटा होना चाहिए जहाँ, महिलाओं समेत सभी लोग फैसला लेने की प्रक्रिया में भाग ले सकें।

❑ राजेश

समाचार

महायज्ञ का अंकुरार्पणम्

दिनांक 9 अक्टूबर 2019 दिन बुधवार को चतुर्वेद स्वाहाकार महायज्ञ का अंकुरार्पणम् कार्यक्रम भव्यता से दिल्ली के लक्ष्मी नारायण (बिड़ला मंदिर) में संपन्न हुआ। हैदराबाद के रामानुजाचार्य पूज्य चिन्न जीयर स्वामी जी के सान्निध्य में 50 से अधिक वेद पंडितों व स्वामी राघवानंद जी महाराज जैसे अनेक श्रेष्ठ संतों के साथ कार्यक्रम में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सह सरकार्यवाह डॉ. कृष्ण गोपाल जी, विहिप केन्द्रीय मार्गदर्शक मंडल के सदस्य दिनेश चन्द्र जी, दिल्ली प्रान्त संघचालक कुलभूषण आहूजा जी सहित अनेक गणमान्य लोगों ने भाग लिया। कार्यक्रम से पूर्व मंदिर (बिड़ला मन्दिर) के चारों और एक विराट वेद यात्रा भी निकाली गई। जिसमें बड़ी संख्या में पूज्य संतों महिलाओं और बच्चों ने भाग लिया।

वेदों के ज्ञान विज्ञान को जन–जन तक पहुंचाने हेतु विश्व हिन्दू परिषद के तत्वाधान में अशोक सिंहल फाउंडेशन व झंडेवालान देवी मंदिर के सहयोग से चतुर्वेद स्वाहाकार महायज्ञ का लक्ष्मी नारायण (बिड़ला मंदिर) मंदिर में आयोजन किया गया है। इस छह दिवसीय यज्ञ के आयोजन में ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद तथा अथर्वेद के लगभग 29 हजार से अधिक मन्त्रों का उच्चारण हैदराबाद के रामानुजाचार्य पूज्य चिन्न जीयर स्वामी के सान्निध्य में 50 से अधिक वेद पंडितों द्वारा संपन्न किया जाएगा। इस दौरान रोजाना जीयर स्वामी प्रवचन भी देंगे तथा इसमें देश भर से अनेक संत, महंत, सामाजिक, धार्मिक, सांस्कृतिक, आध्यात्मिक व राजनैतिक जगत के अनेक गणमान्य लोग भाग लेंगे।

साभार–विश्व संवाद केन्द्र

वेदों में पर्यावरण चिंतन-चिंता-चेतावनी

प्रो0 श्रीराम अग्रवाल

अथर्ववेद और ऋग्वेद में पर्यावरण के महत्व और उसकी रक्षा की आवश्यकता पर जोर देने वाली अनेक ऋचाएं हैं। वेदों में साफ कहा गया है कि पर्यावरण को बचाना ही होगा अन्यथा दुष्परिणाम भुगतने के लिए तैयार रहें।

पर्यावरण का सीधा–सरल अर्थ है प्रकृति का आवरण। कहा गया है, कि **'परितः आवरणं पर्यावरणम्'** प्राणी जगत को चारों ओर से ढकने वाला प्रकृति तत्व, जिनका हम प्रत्यक्षतः एवं अप्रत्यक्षतः, जाने या अनजाने उपभोग करते हैं तथा जिनसे हमारी भौतिक, आत्मिक एवं मानसिक चेतना प्रवाहित एवं प्रभावित होती है, यह पर्यावरण भौतिक, जैविक एवं सांस्कृतिक तीन प्रकार का कहा गया है। स्थलीय, जलीय, मृदा, खनिज आदि भौतिक, पौधे, जंतु, सूक्ष्मजीव एवं मानव आदि जैविक एवं आर्थिक, सामाजिक, राजनीतिक आदि सांस्कृतिक तत्वों की परस्पर क्रियाशीलता से समग्र पर्यावरण की रचना और परिवर्तनशीलता निर्धारित होती है। प्रकृति के पंचमहाभूत – क्षिति, जल, पावक, गगन, समीर – भौतिक एवं जैविक पर्यावरण का निर्माण करते हैं। वेदों में मूलतः इन पंचमहाभूतों को ही दैवीय शक्ति के रूप में स्वीकार किया गया है। मानव–कृत संस्कृति का निर्माण मानव मन, बृद्धि एवं अहं से होता है। इसीलिए गीता में भगवान कृष्ण ने प्रकृति के पांच तत्वों के स्थान पर आठ तत्वों का उल्लेख किया है– **'भूमिरापोनलो वायुःखं मनो बुद्धि रेवच। अहंकार इतीयं में भिन्ना प्रकृतिरष्टधा।।'** (श्रीमद्भागवद्गीता अ–7/4)

वेदों में पर्यावरण से संबंधित अधिकतम ऋचाएं यजुर्वेद तथा अथर्ववेद में प्राप्त होती हैं। ऋग्वेद में भी पर्यावरण से संबंधित सूक्तों की व्याख्या उपलब्ध है। अथर्ववेद में सभी पंचमहाभूतों की प्राकृतिक विशेषताओं और उनकी क्रियाशीलता का विशद् वर्णन है। आधुनिक विज्ञान भी प्रकृति के उन रहस्यों तक बहुत बाद में पहुंच सका है जिसे वैदिक ऋषियों ने हजारों वर्ष पूर्व अनुभूत कर लिया था। इतना ही नहीं, वेदों में प्राकृतिक तत्वों से अनावश्यक और अमर्यादित छेड़छाड़ करने के दुष्परिणामों की ओर भी संकेत किया गया है तथा मानव को सीख भी दी गई है कि पर्यावरण संतुलन को नष्ट करने के दुष्परिणाम समस्त सृष्टि के लिए हानिकारक होंगे।

यजुर्वेद में पृथ्वी को ऊर्जा (उर्वरकता) देने वाली 'तप्तायनी' तथा धन–संपदा देने वाली 'वितायनी' कहकर प्रार्थना की गई है कि वह हमें साधनहीनता/दीनता की व्यथा और पीड़ा से बचाए **'तप्तायनी मेसि वितायनी मेस्यवतान्मा नाथितादवतान्मा व्यथ्झितात्।'**–(यजुर्वेद 5/9)। अथर्ववेद के पृथ्वीसूक्त में 'क्षिति'–पृथ्वी–तत्व का मानव जीवन में क्या महत्व है तथा वह किस प्रकार अन्य चार प्रकृति तत्वों के संग, समायोजनपूर्वक क्रियाशील रहकर, उन समस्त जड़–चेतन को जीवनी शक्ति प्रदान करती है जिनको वह धारण किए हुए है, की विशद व्याख्या उपलब्ध है। अथर्ववेद में पृथ्वी को, अपने में संपूर्ण संपदा प्रतिष्ठित कर, विश्व के समस्त जीवों का भरण–पोषण करने वाली कहा गया है। **'विश्वम्भरा वसुधानी प्रतिष्ठा हिरण्यवक्षा जगतों निवेशनी'**–(अथर्ववेद 12/1/6)। जब हम पृथ्वी की संपदा (अन्न, वनस्पति, औषधि, खनिज आदि) प्राप्त करने हेतु प्रयास करें तो प्रार्थना की गई है कि हमें कई गुना फल प्राप्त हो परंतु चेतावनी भी दी गई है कि हमारे अनुसंधान और पृथ्वी को क्षत–विक्षत (खोदने) करने के कारण पृथ्वी के मर्मस्थलों को चोट न पहुंचे। अथर्ववेद में पृथ्वी से प्रार्थना की गई है **'यत्ते भूमे विखनामि क्षिप्रं तदपि रोहतु। मा ते मर्म विमृग्वरि मा ते हृदयमर्पिपम्।।''** –(अथर्ववेद 12/1/35)–

इसके गंभीर घातक परिणाम हो सकते हैं। आधुनिक उत्पादन और उपभोग एवं अधिकतम धनार्जन की तकनीक ने पृथ्वी के वनों–पर्वतों को नष्ट कर दिया है। खनिज पदार्थों को प्राप्त करने हेतु अमर्यादित विच्छेदन कर पृथ्वी के मर्मस्थलों पर चोट पहुंचाने के कारण पृथ्वी से जलप्लावन और अग्नि प्रज्वलन, धरती के जगह–जगह फटने और दरारें पड़ने के समाचार हमें प्राप्त होते रहते हैं। खानों में खनन करते समय इसी प्रकार की दुर्घटनाओं ने न जाने कितने लोगों की जानें ही नहीं ली।

आवश्यक है कि हम पृथ्वी–वासी पर्यावरण को दूषित न करें, छिन्न न करें अन्यथा हमें उनसे अवगुण ही प्राप्त होंगे। यह वैदिक ऋषियों द्वारा प्रस्तुत एक ऐसा सत्य है जिसकी वर्तमान में अवहेलना कर हम पर्यावरण संतुलन को समाप्त करते जा रहे हैं।

अपितु उन क्षेत्रों के सम्पूर्ण पर्यावरण का विनाश कर उसे बंजर ही बना दिया हैं। हाल ही में मेघालय की संकरी लगभग 1200 फुट गहरी खदान में अचानक पानी आ जाने की घटना विश्व में घटित इसी प्रकार की तमाम त्रासदियों में से एक है।

अथर्ववेद के अनुसार पृथ्वी का हृदय केंद्र – बिंदु आकाश में माना गया हैं जहां से उसको शक्ति मिलती है। वे एक–दूसरे के पूरक हैं। व्योमरूपी आकाश (द्युलोक–अंतरिक्ष से परे अपरिमित) को पिता तथा पृथ्वी को माता माना गया है। पृथ्वी को गगन चारों ओर से अपने आलिंगन में आवोष्टित किए हुए है। **'पृथिवीप्रो महिशों बभूव।'** – (अथर्ववेद 13/3/44)– इसी कारण से जब हम अन्तरिक्ष में व्याप्त इस आवरण (ओजोन परत) को हानिकारक उत्सर्जित गैसों से छिन्न करते हैं तो पृथ्वी का हृदय उच्छेदित होता है।

वेदों में अग्नि (पावक) तत्व को सर्वाधिक शक्तिशाली एवं सर्वव्यापक माना गया है। उसे समस्त जड़–चेतन में ऊर्जा, चेतना तथा गति प्रदान करने वाला एवं नव सृजन का उत्प्रेरक माना गया है। अथर्ववेद में कहा गया है कि **'यस्ते अप्सु महिमा, यो वनेषु य औषधीषु पशुश्वप्स्वन्तः। अग्ने सर्वास्तन्वः संरभस्व ताभिर्न एहिद्रविणोदा अजस्त्रः।।'** (अ.19/3/2)–हे अग्निदेव आपकी महत्ता जल में (बडवाग्नि रूप में), पशु व प्राणियों में (वैश्वानर रूप में) एवं अन्तरिक्षीय मेघों में (विद्युत रूप में) विद्यमान है। आप सभी रूप में पधारें एवं अक्षय द्रव्य (ऐश्वर्य) प्रदान करने वाले हों। यजुर्वेद के अनुसार यही अग्नि द्युलोक (अन्तरिक्ष से भी ऊपर परम प्रकाश लोक) में आदित्य (सूर्य) रूप में सर्वोच्च भाग पर विद्यमान होकर, जीवन का संचार करके धरती का पालन करते हुए, जल में जीवनी–शक्ति का संचार करती है।– **'अग्निर्मूर्धा दिवः ककृत्पतिः पृथ्व्या अयम्। अपारेतां सि जिन्वति।'** (3/12)

पृथ्वी की गुरूत्वाकर्षण शक्ति एवं समस्त ग्रह नक्षत्र मंडल सहित पृथ्वी द्वारा सूर्य की परिक्रमा के जिस तथ्य को आधुनिक विज्ञान आज केवल लगभग 200 वर्ष पूर्व ही समक्ष पाया है, उस भौगोलिक और सौर मंडल के रहस्यपूर्ण तथ्य को हमारे वैदिक ऋषि हजारों वर्ष पूर्व अनुभूत कर चुके थे। अथर्ववेद में ऋषियों ने कहा है– **'मल्वं विभ्रती गुरूभृद् भद्रपापस्य निधनं तितिक्षुः। वरोहण पृथिवी संविदाना सूकराय कि जिहीते मृगाय।।'** (अ.वे.–12/1/48)– अर्थात् गुरूत्वाकर्षण शक्ति के धारण की क्षमता से युक्त, सभी प्रकार के जड़–चेतन को धारित करने वाली, जल देने के साथ मेघों से युक्त सूर्य की किरणों से अपनी मलीनता (अंधकार) का निधन (निवारण) करने वाली पृथ्वी सूर्य के चारों ओर भ्रमण करती है।

वेदों में सभी ऋषियों ने संपूर्ण ब्रह्मांड में सूर्य की केंद्रीय सत्ता को वैज्ञानिकता प्रदान की है जिसे आधुनिक विज्ञान अब क्रमशः समझ सकने में सक्षम हो पा रहा है। ऋग्वेद में कहा गया है– **'सूर्य आत्मा जगतस्तस्थुश च'** – (ऋ.वे.–1.115.1) – अर्थात् सूर्य समस्त सृष्टि की आत्मा/जन्मदाता हैं। सूर्य से पदार्थों को पूर्णता तथा ज्योतिष विज्ञान के अनुसार मानव के जन्म के समय सूर्य तथा उसके आश्रित ग्रह की स्थिति से मानव को समस्त गुण–सूत्र प्राप्त होते हैं। अथर्ववेद में सूर्यदेव को समस्त सृष्टि का प्रादुर्भावकर्ता, अवलंबनकर्ता एवं

स्वामी माना गया है। **'सवा अंतरिक्षादजायत तस्मादन्तरिक्ष जायत'** –(अ.वे.–13/7/3) – अर्थात् सूर्य अंतरिक्ष से उत्पन्न हुए एवं अंतरिक्ष उनसे उत्पन्न हुआ है। आगे कहा गया है–'तस्याम् सर्वानक्षात्रा वश में हैं। वे सूर्यदेव दिन, रात्रि, अंतरिक्ष, वायुदेव, द्युलोक, दिशाओं, पृथ्वी, अग्नि, जल, ऋचाओं एवं यज्ञ से प्रकट हुए हैं एवं ये सब भी सूर्य से ही प्रकट हुए हैं। उपरोक्त सभी के अंश, गुण व अणु सूर्य में विद्यमान रहे हैं एवं रहेंगे इसीलिए सूर्य से ये समस्त पदार्थ एवं पंचभूत उत्पन्न हुए हैं। सूर्य ही एक ऐसे देव हैं। जिनसे आकाश (नक्षत्रलोक), जल एवं ऊर्जा एवं आकाश तथा कीर्ति एवं यश ('यश–अपयश विधि हाथ'–सूर्य राशि के अधीन) समस्त अन्न एवं उपभोग सामग्री, वनस्पति एवं औषधि इत्यादि सृष्टि को प्राप्त हुआ है। **'कीर्तिश्च यश चाम्भश्च नभश्च ब्राह्मणवर्चसं चान्नं चान्नाद्यं च। य एतं देवमेकवृतं वेद।** (अथर्ववेद 13/5/1 से 8)

निष्कर्ष रूप में, यह संपूर्ण पर्यावरण, प्रकृति आवरण, ही है जो विलक्षण दैवीय शक्तियों से व्याप्त है जिससे सृष्टि के समस्त जंगम एवं स्थावर, प्राणी व वनस्पति को चेतना, ऊर्जा एवं पृष्टि प्राप्त होती है। – **द्योश्च म इदं पृथिवी चान्तरिक्षं चमेवयचः। अग्निः सूर्य आपो मेधां विश्वेदेवाश्च सं ददुः।'** (अथर्ववेद 12/1/53) – अर्थात द्युलोक, पृथ्वी, अंतरिक्ष, अग्नि, सूर्य जल एवं विश्व के समस्त देवों (ईश्वरीय प्रकृति शक्तियों) ने सृष्टि को व्यापक किया है। इसीलिए यजुर्वेद में कहा गया है कि पृथ्वी इन समस्त शक्तियों को ग्रहण करे एवं इन सभी शक्तियों के लिए भी सदैव कल्याणकारक रहे। पृथ्वी – पृथ्वीवासी – इन दैवीय शक्तियों को प्रदूषित न करें। **'सन्तेवायुर्मातरिश्वा दधात्त्तानाया ह्रदयं यद्विकस्तम्। यो देवानां चरसि प्राणथेन कस्मैदेव वशडस्तु तुभ्यमै।।** (यजुर्वेद – 11/39) – अर्थात्

उर्ध्वमुख यज्ञकुण्ड की भांति पृथ्वी अपने विशाल ह्रदय को मातृवम प्राणशक्ति संचारक वायु, जल एवं वनस्पतियों से पूर्ण करें। वायुदेव दिव्य प्राणऊर्जा से संचारित होते हैं। अतः पृथ्वी (अपने दूषित उच्छवास–कार्बन उत्सर्जन) से उन्हें दूषित न करें। वर्तमान में अन्यथा की स्थिति के कारण ही वायु की प्राण पोषक शक्ति–आक्सीजन दूषित होकर सृष्टि के जीवन को दुष्प्रभावित कर रही है।

इस पर्यावरण के जनक इन पंचमहाभूतों से ही प्राणिमात्र की 5 ज्ञानेन्द्रियां प्रभावित एवं चेतन होती हैं। इन पंचमहाभूतों के गुण ही हमारी ज्ञानेन्द्रियों के माध्यम से प्राण, मन, बुद्धि, कौशल, अहं अर्थात् भौतिक, जैविक, आत्मिक एवं संस्कृारिक पर्यावरण का निर्माण करते हैं।

आकाश का गुण शब्द : वायु का गुण शब्द एवं स्पर्श तेज (पावक–अग्नि) का गुण शब्द, स्पर्श एवं रूप : एवं रस (स्वाद) तथा पृथ्वी समस्त उपरोक्त चारों गुण सहित सुगंध गुण भी अर्थात् समस्त गुणों का धारण करती है। इसी कारण पृथ्वी के प्राणी द्युलोक, पृथ्वी, अतंरिक्ष, अग्नि, सूर्य, जल एवं विश्व के समस्त देवों (ईश्वरीय प्रकृति शक्तियों) ने सृष्टि को व्यापक किया है। इसीलिए यजुर्वेद में कहा गया है कि पृथ्वी इन समस्त शक्तियों को ग्रहण करें एवं इन सभी शक्तियों के लिए भी सदैव कल्याणकारक रहे। पृथिवी–पृथ्वीवासी–इन दैवीय शक्तियों को प्रदूषित न करें।

पंचमहाभूतों के 5 गुणों को धारित करते हैं एवं उनसे प्रभावित भी होते हैं।

अतः आवश्यक है कि हम पृथ्वी–वासी पर्यावरण को दूषित न करें, छिन्न न करें अन्यथा हमें उनसे दूषित अवगुण ही प्राप्त होंगे। यह वैदिक ऋषियों द्वारा प्रस्तुत एक ऐसा सत्य है जिसकी वर्तमान में अवहेलना कर हम पर्यावरण संतुलन को समाप्त करते जा रहे हैं।

ऋषियों ने न केवल पर्यावरण को प्रदूषित

करने के मानव जीवन एवं सृष्टि को प्रदूषित करने के मानव जीवन एवं सृष्टि पर पड़ने वाले हानिकारक विनाशक परिणामों की ओर संकेत किया, अपितु पर्यावरण की रक्षा एवं हम जो कुछ प्रकृति देवों से प्राप्त कर रहे हैं, उसे उन्हें लौटाकर, पर्यावरण को प्रदूषित करने की अपेक्षा, उसे संरक्षित एवं सवंर्धित करने का भी आदेश दिया है।

ऋषियों ने संपूर्ण प्राकृतिक शक्तियों को शान्त करने व लोक कल्याणकारी बनाए रखने की प्रार्थना की है। अथर्ववेद में उल्लिखित शान्ति सूक्त का पर्यावरण रक्षण में अपरिमित महत्व है–**'शान्ता द्यौः शान्ता पृथ्वी शान्तमिदमुर्वन्तरिक्षम्। शान्ता उदन्वतीरापः शान्ता नः सन्त्वौशधीः।।** (अ.वे. –19/9/1) **शं नो इन्दों बृहस्पतिः श ंनो भवत्वर्यमा।।**

अर्थात् द्युलोक, पृथ्वी, विस्तृत अंतरिक्ष लोक, समुद्र जल, औषधियां ये सभी उत्पन्न होने वाले अनिष्टों का निवारण करके हमारे लिए सुख शान्तिदायक हों। दिन के अधिष्ठाता देव सूर्य (मित्र) रात्रि के अभिमानी देव वरूण, पालनकर्ता विष्णु, प्रजापलाक प्रजापति, वैभव के स्वामी इन्द्र, बृहस्पति आदि सभी देव शान्त हों एवं हमें शांति प्रदान करने वाले हों।

(लेखक बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय के उप कुलपति रहे हैं।)

❑

समाचार

फल-सब्जियां खाएं, नहीं होगा एनीमिया

हरी सब्जियां और सेब, अनार आदि फल नियमित रूप से खाने से हीमोग्लोबिन सही रहता है। खून की कमी नहीं होती है। किशोरावस्था में खासकर लड़कियों को इस बात का विशेष ख्याल रखना चाहिए। यह जानकारी डॉ. तरुणी लालचंदी ने बुधवार को कल्ली पुलिस लाइन में दी।

पुलिस लाइन में सृजन शक्ति वेलफेयर सोसायटी और भारत विकास संघ की ओर से एनीमिया मुक्त भारत व लड़ाई कार्यक्रम के तहत जागरूकता अभियान चलाया गया।

रायबरेली रोड पुलिस लाइन में सृजन शक्ति वेलफेयर सोसायटी और भारत विकास संघ की ओर से एनीमिया मुक्त भारत व लड़ाई कार्यक्रम के तहत जागरुकता अभियान चलाया गया। बुधवार को एनीमिया पर जागरुकता के साथ ही पर्यावरण व जल संरक्षण पर वक्ताओं ने अपने विचार व्यक्त किए। वरिष्ठ रंगकर्मी व समाजसेवी और संस्था की महासचिव सीमा मोदी ने कार्यक्रम का नेतृत्व किया। इस मौके पर मुख्य अतिथि में पुलिस विशेष जांच के डीजी महेंद्र मोदी, विशिष्ट अतिथि जू निदेशक आरके सिंह, वरिष्ठ रंगकर्मी केके श्रीवास्तव, पूजा सिकेरा, आभा सिंह, संस्था के अध्यक्ष बीएन ओझा, सूबेदार मेजर सुनील आदि मौजूद रहे। सीमा मोदी ने बताया कि पुलिस लाइन में प्रशिक्षण प्राप्त कर रही 375 महिला सिपाहियों को एनीमिया के खिलाफ जागरूकता अभियान से जोड़ा गया। यहां महेंद्र मोदी, आरपी सिंह, पूजा सिकेरा आदि मौजूद थे।

लखनऊ निज संवाददाता(साभार–हिन्दुस्तान)

हिन्दु धर्म ही सही अर्थ में मानव धर्म

नागपुर : विश्व में पंथ कई हैं किन्तु धर्म एक ही है–मानवधर्म। कुछ लोग उसे हिन्दू धर्म कहते हैं तो क्या करें। वास्तविकता भी यही है। जल–जंगल–जानवर और सबके प्रति आदर रखने वाला व्यक्ति, वो कोई भी हो, विश्व के किसी भी कोने में रहने वाला हो, उसकी खानपान–रीति रिवाज कुछ भी हो उसकी कोई भी पूजा पद्धति हो या न हो–यह हिन्दू है। यही विश्व भर में संकल्पना रही है। हिन्दू एक ही शब्द ऐसा है, जो इस पूरे कंटेट को बताता है। वह किसी कर्मकांड या ग्रन्थ को नहीं बताता। आप इसे भारतीय कहें या इंडिक विचार, हमारा विरोध नहीं है। इन शब्दों में परम पूज्यनीय सरसंघचालक डॉ. मोहन जी भागवत ने नागपुर में हिन्दू शब्द की व्यापकता से परिचय कराया। मंगलवार की सुबह वे नागपुर के रेशिमबाग प्रांगण में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के विजयादशमी समारोह के उपलक्ष्य में बोल रहे थे। इस अवसर पर प्रमुख अतिथि के रूप में प्रसिद्ध उधमी, समाजसेवी और हिन्दुस्तान कम्प्यूटर्स लिमिटेड (एच सी एच) के संस्थापक तथा अध्यक्ष श्री शिव नाडर उपस्थित थे।

अपने सम्बोधन में सरसंघचालक जी ने कहा कि, भारत देश का व्यक्ति जब विश्व में जाता है। तो सबसे आत्मीयता रखता है। वो 'वसुधैव् कुटुम्बकम' मानता है। हिन्दू कौन है? विश्व में एक सत्य के अनेक रास्ते हैं, ऐसा मानने वाला ही हिन्दू है। किसी को बदलने, या मिटाने की आवश्यकता नहीं है। ईश्वर के रूप एक या अनेक ये व्यक्ति पर निर्भर करता है। सबकी बात सही है। मेरी ही सही है–ऐसा मानना सही नहीं है। लेकिन संघ के बारे में वृथा भ्रांतियाँ फैलाई जाती हैं। किसी ने कह दिया है कि गुरूजी और सावरकर हिटलर को आदर्श मानते थे। अब इसका प्रमाण क्या है, ऐसा पूछने पर वो कहते है कि हमें प्रमाण की आवश्यकता नहीं है। यह अहंकार है। हिन्दू की बात करना यानी मुसलमान का विरोध करना नहीं है।

केन्द्र सरकार कॉलम 370 को अप्रभावी बनाने के काम का उल्लेख करते हुए उन्होंने देश के प्रधानमंत्री, गृहमंत्री, शासक दल और समर्थन करने वाले अन्य दलों का अभिनन्दन किया। उन्होंने कश्मीरी पंडितों के पुनर्वसन को लेकर यह भी कहा कि, जो न्याय कार्य कॉलम 370 के प्रभाव के कारण नहीं हो सके थे उनके संपन्न होने पर तथा कॉलम 370 के प्रभाव से जो अन्याय हो रहा था उनकी समाप्ति से कलम 370 को अप्रभावी बनाने का कार्य पूर्ण होगा। उन्होंने विश्वास व्यक्त किया कि, घाटी के बन्धुओं के मन में जो उनकी जमीनें और नौकरियों को लेकर गलत डर भर गया है वह दूर हो कर वो शेष भारत जनों के साथ एक मन से देश के विकास में अपनी जिम्मेवारी भी संभालेंगे।

'चंद्रयान' से अपेक्षित पूर्ण सफलता ना मिली किन्तु, प्रथम प्रयास में इतना कुछ कर पाना इसे उन्होंने सारी दुनिया को अब तक साध्य न हुयी बात बताया। स्थल तथा जल सीमाओं पर सुरक्षा सतर्कता को पहले से बेहतर बताते हुए उन्होंने स्थल सीमा पार रक्षक और चौकियों की संख्या बढ़ने और जल सीमापर विशेषत : दीपों वाले टापुओं की निगरानी बढ़ाने पर बल दिया।

देश के भीतर आपस में भेद या वैमनस्य बढ़ाने की प्रवृतियों के प्रति सचेत रहने की आवश्यकता प्रकट की। समाज के भीतर सामूहिक हिंसा की घटनाओं को जान बूझकर करवाया जाना और विपर्यस्त रुपये प्रकाशित किया जाना इन जैसी बातों का उल्लेख करते हुए उन्होंने साफ कहा कि, ऐसी घटनाएँ एक तरफा नहीं हैं और हिंसा की प्रवृति परस्पर सम्बंधों पर बुरा असर डालती हैं। ये घटनाएं ना तो हमारे देश की पंरपरा है और ना ही हमारे संविधान मैं बैठती हैं। ऐसी भय पैदा करने का प्रयास होना एक षड्यंत्र है।

आपस में वैमनस्य भड़काने, बढ़ाने का प्रयास, आपस में झगड़ा हो, संघ का नाम घसीटने का प्रयास किया जा रहा है। संघ का स्वयंसेवक ऐसी घटना को रोकने का प्रयास करता है।

'लिंचिंग' जैसी परंपरा यहाँ की नहीं हैं उसकी उपस्थिति दूसरे ग्रंथों में मिलती है हालांकि उस पंथ

का इससे सम्बन्ध नहीं होगा। ईसा मसीह से जुड़ी घटना का उन्होंने उल्लेख किया। जब ईसा मसीह ने एक महिला की यह कह कर जान बचाई थी कि जिसने कभी पाप न किया हो वो पहला पत्थर मारे। राष्ट्र निर्माण की दिशा में उपस्थित कुपोषण, अशिक्षा, अस्वच्छता, बिजली का अभाव तथा अन्य चुनौतियों का सामना करने के लिए किये गए प्रयासों की उन्होंने जानकारी दी। चन्द्र यान मिशन की सफलता की प्रशंसा करते हुए उन्होंने एच.सी. एल. के आरम्भ के दिनों की चुनौतियों का उल्लेख किया। अपने भारत देश की उपलब्धियों पर तथा क्षमताओं पर अभिमान की अनुभूति सदैव रखें ऐसा सन्देश भी श्री शिवजी नाडर ने अपने भाषण में दिया।

कार्यक्रम का प्रारम्भ स्वयं सेवकों द्वारा शारीरिक कार्यक्रम, घोष तथा सामूहिक गीत से हुआ। मंच पर विदर्भ प्रांत संघचालक श्री राम जी हरकरे, नागपुर महानगर संघचालक श्री राजेश जी लोया तथा महानगर सह संघचालक श्री श्रीधर जी गाडगे उपस्थिति थे।

साभार (विश्व संवाद केन्द्र, नागपुर)

❑

वृक्षारोपण

श्याम कुमार

आजादी के बाद पर्यावरण का महत्व समझने वाले पहले महत्वपूर्ण व्यक्ति थे, उत्तर प्रदेश के तत्कालीन राज्यपाल डॉ. कन्हैयालाल माणिकलाल मुंशी। वह बहुत उच्चकोटि के विद्वान, साहित्यकार, समाजसेवी एवं महान राष्ट्रवादी थे। उनके समय में उत्तर प्रदेश हरियाली से भरा हुआ था और उत्तराखण्ड भी उत्तर प्रदेश का हिस्सा था, फिर भी उन्होंने पर्यावरण का महत्व समझा था और बड़े पैमाने पर 'वन महोत्सव' नामक वृक्षारोपण – अभियान की शुरूआत की थी। वह वृक्षारोपण के प्रति पूर्णरूपेण समर्पित थे। उसके बाद सरकारों ने वृक्षारोपण पर ध्यान दिया, लेकिन वह 'ध्यान' प्रदेश में हरियाली–क्रांति लाने के बजाय ढोंग बनकर रह गया। यथार्थ में 'हरित क्रांति' भ्रष्टाचार की चलनी से छनकर लोगों की जेबों व तिजोरियों में चली गई। हर साल आंकड़े दिए जाने लगे कि इतने हजार पेड़ लगाए गए, जो आंकड़े लाखों की संख्या पार करते हुए अब करोड़ों की संख्या में पहुंच गए हैं। विगत दशकों में पेड़ लगाने के जो आंकड़े दिए गए, उनका यदि जोड़ किया जाए तो हमारे प्रदेश में अब तक इतने अधिक पेड़ लग चुके हैं कि उन्हें लगाने के लिए अब लेशमात्र जमीन नहीं बची है, अतः कुर्सी, मेज व अलमारियों में पेड़ लगाने पड़ेंगे। भ्रष्टाचार में पारंगत अफसरशाही अपने राजनीतिक आकाओं को वश में करने में इतने मंजी हुई होती है कि आंकड़ों का जाल बिछाकर सिद्ध कर देती है कि हरियाली बहुत बढ़ रही है। जबकि वास्तविकता यह है कि हरियाली घटती जा रही है। एक ओर भ्रष्टाचार पेड़ों को निगल रहा है तो दूसरी ओर हर साल आंधी–तूफान में बड़ी संख्या में पेड़ गिर जाते हैं।

विगत दशकों में विकास के नाम पर पेड़ों की जो अंधाधुंध कटान हुई, उससे हरियाली का भीषण विनाश हुआ है। शहरों का जितने बड़े पैमाने पर विस्तार होता गया, उसी बड़े पैमाने पर वृक्षों व कृषि–भूमि की समाप्ति हुई। इसका मूल कारण भ्रष्टाचार एवं दूरदर्शिता का अभाव है।

आज शहरों में प्रदूषण की जो स्थिति है, उसे दृष्टिगत रखते हुए शहरों में अधिकाधिक वृक्षारोपण किया जाना चाहिए। ग्रामीण क्षेत्रों की अपेक्षा शहरी क्षेत्रों में वृक्षारोपण की अधिक आवश्कयता है। गहन वृक्षारोपण से शहरों में पर्यावरण की स्थिति में बहुत सुधार होगा। शहरों के चप्पे–चप्पे में पेड़ लगाए जाने चाहिए। लेकिन सिर्फ पेड़ लगाना ही पर्याप्त नहीं है, उनकी रक्षा भी की जानी चाहिए। इस बात की कड़ी निगरानी का तंत्र बनाया जाना चाहिए कि पेड़ वास्तव में लगाए जाएं तथा वे जीवित भी रहें।

सम्पादक, समाचारवार्ता
ईडी–33, वीरसावरकर नगर
(डायमन्ड डेरी), उदयगंज, लखनऊ।
मो0–9415002458

❑

देव संस्कृति भाग्यवादी नहीं कर्मवादी

भारत जैसे कृषि प्रधान देश में जहाँ तीन महीने ही वर्षा होती है और वो भी अनिश्चित– सी अतः वन संरक्षण की ओर पूरा ध्यान नहीं दिया गया तो हमें निकट भविष्य में अकाल का सामना करने के लिए तैयार रहना चाहिए। विशेषतः भारत जैसे कृषि प्रधान देश के लिए तो वन ही अन्नदाता हैं। प्राचीनकाल में जबकि देश में वनों की बहुलता थी, वनवासी तपस्वियों को समस्त योगक्षेम वनों पर ही आधारित था। भोजन, छाजन यहाँ तक कि वस्त्र भी जंगलों से ही प्राप्त होते थे। कन्द– मूल, फल– पत्ते आदि का सात्विक आहार, बाँस, ताड़ एवं वन आदि से कुटी, भोजन– पत्र से वस्त्रों की आवश्यकता पूरी की जाती थी। गुरुकुलों के आचार्य और राजकुलों के राजकुमार, अभिजात्य वर्ग के छात्र अपने अध्ययन काल में तत्कालीन समाज का प्रबुद्ध वर्ग अपने जीवन का अधिकांश समय वनों में ही व्यतीत करता था। राज्यों की सीमाओं के वन प्रदेश अलंघ्य होते थे। सुरक्षात्मक दृष्टि से किसी भी राज्य के लिए वनों को अत्यन्त महत्त्व था, इसलिए वनों की रक्षा के लिए विशेष चौकी पहरे का प्रबन्ध होता था। सेना के वाहनों घोड़े तथा हाथियों का चारा–पानी पूर्णतः इन्हीं जंगलों से प्राप्त होता था। यदि यह कहें कि प्राचीन भारत के समस्त निवासियों को भरण–पोषण जंगलों पर ही आधारित था तो कोई अतिश्योक्ति न होगा। आज भी ईंधन, इमारती लकड़ी, औषधि, जड़ी– बूटी, गोंद, लाख, मधु तथा अन्य महत्त्वपूर्ण उद्योगों को कच्चा माल वनों से प्राप्त होता है। बीड़ी का तो समस्त उद्योग जंगलों पर ही निर्भय है। इस भाँति देश की जनसंख्या के अधिकांश भाग की रोटी–रोजी जंगलों से ही चलती है। विदेशी पर्यटकों के लिए भारत के जंगल अफ्रीका महाद्वीप के जंगलों से अधिक विचित्र और अधिक मनोहर हैं। जंगलों के शान्त और निरापद वातावरण में भारतीय तत्त्व–दर्शियों ने प्रकृति के गहनतम रहस्यों को अध्ययन किया है। श्री समृद्धि के कुबेर इन वन प्रदेशों को संरक्षण जनता एवं सरकार दोनों को अनिवार्य उत्तरदायित्व है, किन्तु यह उत्तरदायित्व केवल सरकार पर ही नहीं छोड़ा जा सकता। सरकार के काम ढंग से होते हैं और सरकार भी तो जनता के आदमियों द्वारा ही चलती है। वनों का महत्त्व समझ लेने पर सरकार व जनता दोनों की तरफ से वन संरक्षण का काम हो सकता है। सरकार भी वनों से लाभ उठाने के लिए ठेकेदारों को लकड़ी कटाई के ठेके देती है। उनमें भी पूरी– पूरी सावधानी रखने की आवश्यकता है, नहीं तो वन की सघनता को खतरा उत्पन्न हो सकता है। वनों की अन्धाधुन्ध कटाई रोक कर उन्हें सघन बनाने का प्रयास होना चाहिए। यदि हम वन क्षेत्र को बढ़ा न सकें तो कम से कम उन्हें विरल होने से तो रोकना ही चाहिए। अभी तक अधिकांश जनता खाना पकाने के लिए लकड़ी तथा लकड़ी के कोयले जलाती है। इससे हमारी वन–सम्पदा को बहुत हानि पहुँचती है। इसी गति से यदि ईंधन की खपत होती रही तो निकट भविष्य में हमारे सामने ईंधन की समस्या विकराल होकर आयेगी। अतः भोजन पकाने में कम से कम ईंधन लगे ऐसी पद्धति को अपनाया जाना आवश्यक है। भाप द्वारा पकाये जाने की विधि में लगभग एक तिहाई ईंधन खर्च होता है। नगरवासियों के लिए भाप द्वारा भोजन पकाने के उपकरण महंगे होते हुए भी ईंधन की बचत हो देखते हुए सस्ते ही पड़ते हैं। अतः इनका उपयोग करना लाभकारी है। जहाँ फलों के बगीचे लगने की सुविधा है, जलवायु अनुकूल है, वहाँ खाद्यान्न तथा अन्य फसलें न उगाकर फलों की बगीचे लगाने पर ही कृषकों को ध्यान देना चाहिए। यों भी कम उपजाऊ भूमि पर आम, अमरूद, बेर आदि के बाग लगाकर अधिक व स्थाई लाभ कमाया जा सकता है। इस प्रकार देश की वानस्पतिक सम्पदा में अभिवृद्धि होगी। देश की घटती हुई वन–सम्पदा को दृष्टिगत रखकर स्वर्गीय कन्हैयालाल माणिकलाल मुन्शी ने वन महोत्सव कार्यक्रम प्रतिवर्ष मनाने का अभियान चलाया था, किन्तु वह अभियान अभी तक सरकारी क्षेत्रों तक ही सीमित होकर रह गया है। यों यह अब भी प्रति वर्ष मनाया जाता है। पेड़ लगाये जाते हैं, किन्तु यह मात्र आँकड़े करने की बात बनकर रह गई

है। इसे जनता का अभियान बनाने की आवश्यकता है। प्रत्येक समझदार व्यक्ति को अपने इस दायित्व को समझना चाहिए। हम अपने खाने जितना अन्न उगाते हैं, या नहीं उगाते तो उसे मेहनत यह भी कर्तव्य है कि हम जितनी प्रकृति प्रदत्त लकड़ी जलाते हैं, उतनी प्रकृति प्रदत्त लकड़ी जलाते ही वन– सम्पदा की वृद्धि भी करें नहीं तो एक प्रकार का प्रकृति द्रोह व भावी सन्तति के हित मे अपराध होगा। हम उनके हक पर डाका डाल गये। जनता के सजग सचेष्ट रहने की आवश्यकता है कि वर्तमान वन कटने व विरल होने से बचे रहें। वृक्षारोपण परम पुनीति कार्य है। पुण्य लाभ हर कोई व्यक्ति कर सकता है। कम से कम जितनी लकड़ी काम में लेते हैं, उतनी क्षति तो हमें करनी ही चाहिए। 15 वीं शताब्दी में जबकि देश पर मुस्लिम शासकों को आधिपत्य था। शेरशाह, अकबर, जहाँगीर आदि मुस्लिम सम्राटों ने समस्त राजपथ के दोनों ओर विशाल और सघन छायादार वृक्ष लगवाये। स्थान–स्थान पर नवीन उद्यान लगाकर देश की श्री और सुषमा की अभिवृद्धि की। काश्मीर का शालीमार एवं निशाग बाग आज भी इसके साक्षी हैं। पिछली दो शताब्दियों में वृक्षों को बड़ी निर्दयता से काटा गया है, जिसका दुष्परिणाम आज हमारे सामने है। किसी समय वृक्ष के स्वतः सूख जाने पर उसकी लकड़ी काम में लाई जाती थी किन्तु पिछली इन दो– तीन शताब्दियों में तो सैकड़ों वर्ग मील में फैले वनों को काटकर काश्त की जा रही है, जो कि राष्ट्रीय स्तर पर कोई अधिक मुनाफे को सौदा साबित नही हुआ है। बढ़ती हुई आबादी को पैदा करने की दृष्टि से यदि इसे उचित मान भी लिया गया तो दूसरी ओर मरुस्थल का बढ़ना, चरागाहों की कमी तथा वर्षा की कमी घोर व्यापक विभीषिका बनती जा रही है। किन्तु संतोष है कि देश के कुछ मनीषियों को ध्यान इस ओर आकृष्ट हुआ। उन्होंने वर्षा तथा वनों को एक–दूसरे का पूरक सिद्ध करके सरकार का ध्यान इस ओर आकर्षित किया। रोम, बेबीलोन तथा फारस के विद्वानों ने भी वर्षा के लिए वनों के संरक्षण को प्रमुख उत्तरदायित्व बताया और अपने देश की सरकारों को इस बात के लिए बाध्य किया कि राष्ट्र की समृद्धि के लिए वृक्षारोपण एवं वन संरक्षण को प्रमुख राजकीय उत्तरदायित्व समझा जाय। भारतवर्ष में भी पूर्व खाद्य मंत्री श्रीकन्हैयालाल माणिकलाल मुंशी ने वृक्षारोपण की योजना बनाई और अधिक वर्षा के लिए वन महोत्सव आन्दोलन का शुभारंभ किया। आज परिस्थितियों का तकाजा है कि हम इस आन्दोलन को अपना पुनीत कर्तव्य एवं अनिवार्य उत्तरदायित्व समझें और तन– मन से सरकार को सहयोग देकर राष्ट्र को सुखी एवं समृद्ध बनाने में भागीदार बनें। ❑

आप भी लिखें

सेवा संवाद के आप सुधी पाठक हैं, आपके विचार, सुझाव हमारे लिए सदैव प्रेरणादायी रहे हैं। सेवा सम्बन्धी आलेख, सेवा के प्रेरक प्रसंग, सेवा कार्य के उल्लेखनीय व्यक्तित्व, सेवा सस्थानों का परिचय एवं उनके कार्य, सेवा को प्रोत्साहित करने वाली घटनाएं, काव्य–गीत, कथा–कहानी आदि विषयों पर सामग्री प्रकाशित करना हमारा उद्देश्य हैं। अस्तु आप से प्रार्थना है कि हमारी सीमाओं को ध्यान में रखते हुए अपना आलेख भेजकर हमारा सहयोग करने का कष्ट करें। प्रत्येक अंक में प्रकाशित आलेखों पर आप अपनी प्रतिक्रिया प्रेषित करें। पुनश्च, जिन बन्धुओं की वार्षिक सदस्यता शुल्क देय हो गये हैं तथा जो आजीवन ग्राहक बनना चाहते हैं उन सभी से प्रार्थना है कि अपेक्षित शुल्क भेज कर हमें अनुगृहीत करें।

हमारा पता है–

E-mail : sewasamwad@gmail.com / sevasamvad@outlook.com

सेवा संवाद

सी-91 निराला नगर, लखनऊ - 226020 उत्तर प्रदेश

मो0 : 9450020514, 9454049918

देश में संघ कार्य का निरंतर विस्तार हो रहा है

डॉ. मनमोहन वैद्य

भुवनेश्वर। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सह सरकार्यवाह डॉ. मनमोहन वैद्य जी ने कहा कि संघ के स्वयंसेवकों के कठोर परिश्रम एवं सतत् प्रयास और समाज की अनुकूलता के कारण संघ कार्य का लगातार विस्तार हो रहा है। विशेष कर युवा व छात्र संघ से जुड रहे हैं। स्थानीय शिक्षा व अनुसंधान विश्वविद्यालय में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की कार्यकारी मंडल बैठक के शुभारंभ के बाद पत्रकारों से बातचीत में सह सरकार्यवाह ने जानकारी दी।

एक प्रश्न के उत्तर में डॉ. वैद्य ने कहा कि अयोध्या में श्रीराम मंदिर निर्माण का मुद्दा राजनैतिक मुद्दा नहीं है। यह देश की आस्था का विषय है। इसी तरह कश्मीर से अनुच्छेद 370 को हटाये जाने के सवाल पर उन्होंने कहा कि संविधान में इस धारा का उल्लेख अस्थायी प्रावधान के रुप में था। उन्होंने एक और प्रश्न के उत्तर में कहा कि पश्चिम बंगाल में राष्ट्रीय विचारों के लोगों की हत्या हो रही है, जो दुर्भाग्यपूर्ण है।

उन्होंने कहा कि संघ का मानना है कि सरकार सब कुछ नहीं करेगी। समाज को स्वयं आगे आकर अपना कार्य करना होगा। इसी भावना को लेकर संघ के स्वयंसेवक समाज परिवर्तन के कार्य में सक्रिय हैं। 1998 से प्रारंभ ग्राम विकास का परिणाम अनेक गांवों में देखने को मिल रहा है। उन्होंने कहा कि समाज में जाति पाति के बंधन को मिटाने तथा पूरा समाज एक है, ऐसी भावना समाज में जागृत करने एवं सामाजिक समरसता पैदा करने के लिए संघ स्वयंसेवक कार्य कर रहे हैं। भारतीय नस्लों की गायों के संवर्धन के लिए भी संघ के स्वयंसेवक कार्य कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि समाज में एकल परिवार का प्रचलन बढ़ने के कारण परिवारों में मूल्यों का क्षरण हो रहा है। इस कारण संघ के स्वयंसेवकों द्वारा कुटुंब प्रबोधन का कार्य किया जा रहा है। उन्होंने कहा कि पर्यावरण की रक्षा के लिए संघ के स्वयंसेवक तीन पी (P) यानी पौधे लगाने, पानी का कम उपयोग तथा प्लास्टिक का उपयोग न करने को लेकर जागरूकता लाने के कार्य में लगे हैं।

डॉ. वैद्य ने बताया कि वर्तमान में पूरे देश में 57, 411 दैनिक शाखाएं एवं 18923 साप्ताहिक मिलन चल रहे हैं। वर्ष 2009 में संघ कार्य का विस्तार करने की योजना बनायी गई थी। इस कारण 2010 से ही शाखाओं का लगातार विस्तार हो रहा है। 2010 के बाद शाखाओं की संख्या में कुल 19 हजार 584 की बढ़ोतरी हुई है। 2010 से 2014 तक लगभग 6 हजार शाखाओं की बढ़ोतरी हुई। उन्होंने कहा कि देश भर के 6000 प्रखंडों में यानि 90

प्रतिशत प्रखंडों में संघ का काम है। उन्होंने बताया कि देश भर में चलने वाली शाखाओं में से छात्र व युवाओं की शाखाओं की संख्या 60 प्रतिशत है, 20 से 40 साल के आयु वर्ग के बीच स्वयंसेवकों की शाखाओं का प्रतिशत 29 प्रतिशत है। 40 साल की आयु से अधिक प्रौढ़ लोगों की शाखाओं की संख्या 11 प्रतिशत है।

सह सरकार्यवाह ने बताया कि राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ ने 2013 में वेबसाइट के जरिये ज्वाइन आरएसएस के नाम से एक योजना शुरु की थी। इसमें काफी संख्या में लोग जुड़ने के लिए अनुरोध कर रहे हैं। इसमें युवाओं व छात्रों की संख्या सर्वाधिक है। वर्ष 2013 में ही इसके जरिये संघ से जुड़ने के लिए 88,843 अनुरोध प्राप्त हुए थे। 2014 से लेकर 2016 तक औसतन 90 से 95 हजार लोगों ने, 2017 में 1.25 लाख, 2018 में 1.5 लाख एवं 2019 में सितंबर माह तक 1.3 लाख अनुरोध संघ से जुड़ने के लिए प्राप्त हुए हैं।

उन्होंने कहा कि संघ के कार्यकर्ताओं के प्रशिक्षण पर भी जोर दिया जा रहा है। इसी क्रम में कार्यकर्ता विकास वर्ग आयोजित किये जा रहे हैं। इन वर्गों में प्रशिक्षण को कैसे बेहतर किया जा सकता है तथा इसमें कैसे वेल्यू एडिशन किया जा सकता है, इस संबंध में भी बैठक में चर्चा होगी।

उन्होंने कहा कि अखिल भारतीय कार्यकारी मंडल की बैठक में देश के समस्त प्रांतों से प्रांत स्तरीय अधिकारी शामिल हो रहे हैं। तीन दिनों तक चलने वाली बैठक में लगभग 350 प्रतिनिधि शामिल हो रहे हैं। सवांददाता सम्मेलन में संघ के अखिल भारतीय प्रचार प्रमुख अरुण कुमार व सह प्रचार प्रमुख नरेन्द्र ठाकुर भी उपस्थित थे।

इससे पूर्व राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के अखिल भारतीय कार्यकारी मंडल की बैठक भुवनेश्वर में प्रारंभ हुई। बैठक का शुभारंभ प. पू. सरसंघचालक डॉ. मोहन भागवत जी तथा मा. सरकार्यवाह भय्याजी जोशी ने दीप प्रज्ज्वलन कर किया। तीन दिवसीय बैठक 16 अक्तूबर से 18 अक्तूबर 2019 तक चलेगी। ❑

अपने संकल्प से नक्सली पति को बनाया प्रगतिशील किसान

राजेश प्रसाद गुप्ता– लोहरदगा

नारी शक्ति है, नारी संकल्प का दूसरा नाम है। अपने संकल्प से परिस्थितियों को बदल सकती है। झारखंड में लोहरदगा जिले के धानुमुंजी गांव की शक्ति के बारे में सुनकर नारी की शक्ति का अहसास होता है। इंटर पास शील तिग्गा ने अपनी सूझबूझ से न सिर्फ भटके हुए अपने पति को मुख्यधारा से जोड़ा, बल्कि आज वह अपने पति को एक सफल के रूप में पहचान दिलाने में कामयाब हो चुकी है। शील के कार्य से दूसरे लोग प्रेरणा ले रहे है। धनामुजी गांव के दानियल लकड़ा कभी इतने कुख्यात थे कि इनके नाम से क्षेत्र के लोगों में डर था। हाथों में डर था। अब राइफल की जगह कुदाल ने ले ली है। यह उनकी पत्नी शील के संकल्प और लगन का फल है। माओवादी नक्सली संगठन के साथ जुड़े रहे दानियल को मुख्यधारा में लाने में पत्नी शील का काफी योगदान है। अब दानियल की पहचान एक हार्डकोर नक्सली के रूप में होती है। लोग दानियल की खेती को देखने को लेकर दूर–दूर से आते है। शील कहती है कि स्त्री चाह ले तो कुछ भी नामुमकिन नहीं है। 2011 में दानियल लकड़ा से विवाह के बाद पति के नक्सली होने की जानकारी हुई। तब बेचैनी बढ़ गई थी। मन में हमेशा डर बना रहता था। शील ने बताया, इसके बाद मैनें अपने पति को मुख्याधारा में वापस लाकर सामान्य जिंदगी जीने की ठान ली। धीरे–धीरे मैनें अपने पति को नक्सली गतिविधियों से होने वाले दुष्प्रभाव के बारे में बताया शुरू किया। सरकार की आत्मसमर्पण नीति का लाभ उठाने के फायदे बताए। अंततः पति ने भी मेरी बात मान 2013 मे आत्मसमर्पण कर दिया। ❑

मधुमेह रोगी साल में एक बार जरूर कराएं आँखों की जांच

डॉ. शोभित चावला

देश में डायबिटीज (मधुमेह) का प्रकोप दिनोंदिन बढ़ रहा है। यह हार्ट, किडनी के साथ–साथ आंख पर भी वार कर रही है। अनियंत्रित शुगर व्यक्ति को रेटिनोपैथी का दंश दे रही है। वहीं बीमारी का निदान होने के बावजूद लोग अनजान हैं। ऐसे में वह अंधता का शिकार हो रहे हैं।

11 अक्टूबर को विश्व दृष्टि दिवस है। इस दौरान विटियो रेटिनल सोसाइटी ऑफ इंडिया के अध्यक्ष डॉ. शोभित चावला ने रेटिनोपैथी से बढ़ रही अंधता जो आंकड़े पेश किए हैं, वह चौंकाने वाले हैं। उन्होंने बताया कि डायबिटीज का बढ़ता प्रकोप आंख पर भी भारी पड़ रहा है। 15 से 20 वर्ष में डायबिटीज के रोगी रेटिनोपैथी के शिकार हो रहे हैं। वहीं समस्या को नजरंदाज करने से साइट थ्रेटनिंग डायबिटीक रेटिनोथेरेपी की गिरफ्त में आ रहे हैं। ऐसे में मरीज की रोशनी क्षय होने लगती है। इलाज न मिलने पर यह दिक्कत धीरे–धीरे अंधता का कारण बन जाती है।

आंख में पानी व रक्त बन जाता खतरा :

डॉ. शोभित चावला के मुताबिक, रेटिनोपैथी होने पर आंख में दो तरह की दिक्कतें पनपती हैं। इसमें पर्दे के सेंटर में पानी आ जाता है। इसे डायबिटिक मैक्युलर एडीमा कहते हैं। वहीं दूसरी समस्या आंख में रक्त आना है। आंख की मुख्य धमनियों में रक्त आपूर्ति का बाधित होना है। ऐसे में नई खून की धमनी पनपने लगती है। इनकी वॉल कमजोर होने से रेप्चर हो जाती हैं।

- ✓ समय–समय पर कराएं जांच 'डायबिटीज के मरीज एक वर्ष में आंख की जांच अवश्य कराएं
- ✓ 'रेटिनोपैथी होने पर छह–छह माह पर चेकअप कराएं
- ✓ 'रेटिनोपैथी का प्रकोप बढ़ने पर तीन–तीन माह पर जांच कराएं
- ✓ सुधारें आदत, बदलें खानपान– डायबिटीज रोगी शुगर की मात्र नियंत्रित रखें
- ✓ 'संतुलित व पौष्टिक आहार लें, फास्ट फूड व अधिक काबरेहाइड्रेड के खाद्य पदार्थ का सेवन न करें
- ✓ 'डायबिटीज के मरीज व्यायाम अवश्य करें
- ✓ फैक्ट फाइल 'विश्व में लगभग 40 करोड़ लोग डायबिटीज से पीड़ित
- ✓ 'देश में छह करोड़ से अधिक लोग 'देश में आठ करोड़ लोग डायबिटीज की बॉर्डर लाइन पर
- ✓ 'डायबिटीज से प्रति वर्ष 80 लाख लोग विभिन्न बीमारियों की चपेट में आ रहे हैं

'देश में लगभग 22 लाख लोग कॉर्नियल ब्लाइंडनेस से पीड़ित हैं, इनमें से दो लाख यूपी के हैं ।

डॉ. शोभित चावला के मुताबिक, आंख के पर्दे के सेंटर में पानी की समस्या को एंटी वेजेफ इंजेक्शन से ठीक किया जा सकता है। वहीं आंख में रक्त की दिक्कत में यदि धमनी रेप्चर नहीं है तो लेजर विधि से इलाज मुमकिन है। जबकि धमनी के रेप्चर हो जाने पर सर्जरी से बीमारी का समाधान संभव है। ❑

जैसे महौषधि और वाह्य प्राणवायु सबकी सदा पालन करते हैं, उसी प्रकार उत्तम राजा और वैद्यजन समस्त उपद्रव और रोगों से निरंतर रक्षा करते हैं।

ऋग्वेद

स्वयंसेवक देशभर में डेढ़ लाख से अधिक सेवा प्रकल्प चला रहे

भय्याजी जोशी

भुवनेश्वर– राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के स्वयंसेवक देशभर में 1. 50 लाख से अधिक सेवा कार्य चला रहे हैं. 20 स्थानों पर सेवार्थ बड़े अस्पताल एवं 15 ब्लड बैंक भी चलाते हैं।

भुवनेश्वर में चल रही संघ की अखिल भारतीय कार्यकारी मंडल की बैठक के अंतिम दिन आयोजित पत्रकार सम्मेलन में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सरकार्यवाह भय्याजी जोशी ने कहा कि आपदा के समय तो संघ पहले से ही काम कर रहा था, परंतु 1989 से संघ ने योजनाबद्ध रूप से सेवा क्षेत्र में कार्य करना शुरू किया। वर्तमान में स्वयंसेवकों द्वारा डेढ़ लाख से अधिक सेवा प्रकल्प चलाए जा रहे हैं।

उन्होंने कहा कि 20 स्थानों पर संघ के स्वयंसेवक सेवार्थ बड़े अस्पताल चलाते हैं, उनकी क्षमता 50 से 150 बेड तक है। 15 ब्लड बैंक संघ के स्वयंसेवक चलाते हैं, जो उस क्षेत्र की 50 प्रतिशत तक की आवश्यकता को पूरा करते हैं।

उन्होंने कहा कि दिव्यांगों के क्षेत्र में भी स्वयंसेवक कार्य कर रहे हैं। नेत्रदान के क्षेत्र में स्वयंसेवकों के प्रयास से 3 से 4 हजार नेत्रदान प्रतिवर्ष होते हैं।

ग्राम विकास के क्षेत्र में भी संघ के स्वयंसेवक कार्य कर रहे हैं । इन प्रयासों से अभी तक देश के 250 गांवों में ग्रामवासियों के सहयोग से ही विकास का मॉडल स्थापित किया है।

उन्होंने कहा कि हमारी ग्राम विकास की परिकल्पना में हम मानते हैं कि गांव के लोग ही अपना कार्य करें। हम केवल सहयोग करेंगे। संघ के स्वयंसेवकों ने पांच क्षेत्रों जैसे शिक्षा, स्वास्थ्य, कृषि, सामाजिक वातावरण, स्वावलंबन को ग्राम विकास में शामिल किया है।

उन्होंने कहा कि पूरे देश में एक लाख से अधिक गांव ऐसे हैं, जहां संघ के विचारों को स्वीकार करने वाले, समझने वाले व सहयोग करने वाले लोग हैं।

प्रतिदिन शाखा में आने वाले 16 –17 साल की आयु से ऊपर के लोगों के शामिल होने वाले स्वयंसेवकों की संख्या लगभग 5 लाख है तथा 17 वर्ष से कम आयु के भी चार लाख दैनिक आते हैं। उन्होंने कहा कि देश में लगभग 59 हजार ग्रामीण मंडलों में से लगभग 30 हजार मंडलों में संघ का काम है।

पत्रकारों द्वारा एनआरसी के मामले में पूछे गये सवालों के उत्तर में भय्याजी जोशी ने कहा कि एनआरसी पूरे देश में लागू होना चाहिए। उन्होंने कहा कि किसी भी सरकार का कार्य है कि देश में घुसपैठियों की पहचान करे और नीति बना कर उसके आधार पर उचित कार्रवाई करे. अभी तक यह प्रयोग केवल असम में हुआ है। इसे पूरे देश में लागू करना चाहिए।

अयोध्या में राम मंदिर के निर्माण को लेकर पूछे गये सवाल के उत्तर में उन्होंने कहा कि हमारा यह मानना रहा है कि अयोध्या में श्रीराम जन्मभूमि पर मंदिर निर्माण को लेकर सभी बाधाओं को समाप्त किया जाना चाहिए। अब जब इस मामले को लेकर न्यायालय में सुनवाई पूरी हो चुकी है और हम आशा करते हैं कि निर्णय हिन्दुओं के पक्ष में आएगा।

न्यायालय से बाहर इस मामले को सुलझाने के संबंध में किये जा रहे प्रयासों के संबंध में पूछे गये सवाल के उत्तर में उन्होंने कहा कि इस मामले को सद्भावना से समाधान निकालने के लिए प्रयास किये गए। अगर ऐसा होता तो भारत की प्रतिष्ठा विश्व में बढ़ी होती। हम ने भी इन प्रयासों का

स्वागत किया था। लेकिन ऐसा नहीं हो पाया और न्यायालय में मामला लंबा समय तक चला। अब न्यायालयीन कार्रवाई पूरी हो गई है, अब सबको निर्णय की प्रतीक्षा करनी चाहिए।

समान आचार संहिता लागू करने के संबध में पूछे गये एक प्रश्न के उत्तर में कहा कि यह मांग काफी पुरानी है। संविधान निर्माण के समय ही इसका फैसला हो जाना चाहिए था। यह सभी के हित में है और किसी भी देश में उसके नागरिकों के लिए एक समान कानून होना चाहिए।

कश्मीरी पंडितों की वापसी के संबंध में उन्होंने कहा कि सुरक्षा कारणों से कश्मीरी पंडितों को अपने घरों से पलायन करना पड़ा था। हम चाहते हैं कि कश्मीर में सुरक्षा का पुनरू वातावरण बने ताकि कश्मीरी हिन्दू समाज की उनके अपने घरों में वापसी हो सके।

अखंड भारत के संबंध में पत्रकारों द्वारा पूछे गये सवाल का उत्तर देते हुए उन्होंने कहा अंखड भारत की कल्पना उनका सपना है। विभाजित भारत के समस्त इलाकों की सांस्कृतिक धारा एक ही है।

बंगाल में निरंतर हो रही हिंसा पर उन्होंने कहा कि किसी भी सरकार का दायित्व है कि उसके नागरिकों की समुचित सुरक्षा सुनिश्चित करे. यह दुर्भाग्यपूर्ण है कि वामपंथी शासनकाल में विरोधी विचारधारा के प्रति प्रारम्भ हिंसा का चक्र वर्तमान सरकार के बाद भी अबाध गति से चल रहा है।

इस पत्रकार वार्ता में संघ के अखिल भारतीय प्रचार प्रमुख अरुण कुमार व सह प्रचार प्रमुख नरेन्द्र ठाकुर उपस्थित थे।

❑

अद्वेष्टा सर्वभूतानां मैत्रः करूण एव च।
निर्ममो निरहंकारः समदुःख सुखः क्षमी।।
सन्तुष्टः सततं योगी यतात्मा दृढ निश्चयः।
मय्यर्पित मनोबुद्धिर्यो मद्भक्तः स मे प्रियः।।

अर्थ – जो पुरुष सब भूतों (प्रणियों) में द्वेष भाव से रहित, स्वार्थ रहित, सबका प्रेमी और हेतु रहित दयालु है तथा ममता से रहित, सुख–दुःखों की प्राप्ति में सम और क्षमावान् है, तथा जो योगी निरन्तर सन्तुष्ट है, मन–इन्द्रियों सहित शरीर को वश में किए है और मुझमें दृढ़ निश्चय वाला है, मुझमें अर्पित मन, बुद्धि वाला मेरा भक्त मुझको प्रिय है।

यस्मान्नोद्विजते लोको लोकान्नोद्विजते च यः।
हर्षामर्षभियोद्वेगैर्मुक्तो यः स च मे प्रियः।।

अर्थ– जिससे संसार उद्विग्न नहीं होता और जो स्वयं भी किसी जीव से उद्विग्न नहीं होता, तथा जो हर्ष, अमर्ष, भय और उद्वेग आदि से रहित है–वह भक्त मुझको प्रिय है।

पंडित दीनदयाल उपाध्याय स्वास्थ्य सेवा केन्द्र

ग्राम परतोष, अमेठी (उ.प्र.)

अनुरोध

जिनकी कथनी और करनी में सदैव एकरूपता रही हो, जिन्होंने अपना सम्पूर्ण जीवन मातृभूमि के चरणों में अर्पित कर दिया हो, जो अकृत्रिमता से दूर, सहज, स्वाभाविक, सादा रहन-सहन और उच्च विचारों के धनी रहे हों, ऐसे समाज सेवी, कुशल संगठक, राष्ट्रभक्त श्रद्धेय पं. दीनदयाल उपाध्याय का जन्म 25 सितम्बर 1916 ई. को नगला चन्द्रभान, फरह, मथुरा (उ.प्र.) में हुआ था। बाल्यकाल से ही वे संवेदनशील रहे। उनके हृदय में समाज के निर्बल, पिछड़े, बनवासी, ग्रामीण, अनाश्रित, वृद्ध, अनपढ़-बालक, रोगी-पीड़ित सभी के प्रति मानवीय करुणा थी, उनके एकात्म मानव दर्शन और अन्त्योदय की भावना तथा समाज और राष्ट्र को समुन्नत करने के स्वप्न को साकार बनाने तथा आगे बढ़ाने की पवित्र भावना के साथ पंडित दीनदयाल जी की जन्मशती पर उनके प्रति आदर-सम्मान व्यक्त करने के लिए ग्राम परतोष, जिला अमेठी में पं. दीनदयाल उपाध्याय स्वास्थ्य सेवा केन्द्र की स्थापना का निर्णय लिया गया। इस निमित्त 20400 वर्गफुट जमीन क्रय कर ली गई है। अगला महत्त्वपूर्ण चरण निर्माण कार्य का है, जिसके लिए सहयोगी बन्धुओं से आर्थिक सहकार प्राप्त हो रहे हैं। इस महान यज्ञ कार्य में आहुति के लिए आप भी अपने सहकार से अनुगृहीत करें, यही आपसे विनती और प्रार्थना है।

कृपया अपनी सहयोग राशि भाउराव देवरस सेवा न्यास के पक्ष में चेक/ड्राफ्ट जो लखनऊ में देय हो, भेजने की कृपा करें। अथवा RTGS/NEFT के लिए Bhaorao Deoras Seva Nyas A/c No. 30448433657 State Bank of India, Daliganj (Niralanagar) Lucknow (IFSC Code: SBIN0003813) में धनराशि जमा कराकर अपने पैन नं. एवं पते के साथ कार्यालय के पते (सी-91, निरालानगर, लखनऊ-226020 दूरभाष 0522-4001837 मो. 9450020514) पर हमें सूचित करें।

– राजेश (संयोजक)

मो. 9793120738

भाऊराव देवरस सेवा न्यास को दिया गया दान आयकर अधिनियम की धारा 80G(5)(vi) के अन्तर्गत नियमानुसार करमुक्त है। न्यास का PAN AAATB1049G है।

प्रसाद भवन

डॉ. दिनेश चमोला 'शैलेश'

संसार के भवन जितने आकर्षक बने मन के भवन उतने ही जीर्ण–शीर्ण एवं खंडहरनुमा हो गए और उनमें निराशाओं, कुंठाओं की बड़ी–बड़ी बीहड़ झाड़ियां उग आई हैं। इसका दुष्प्रभाव यह हुआ कि बाहर का संसार आशामय एवं अंदर का संसार निराशामय होता चला गया। सांसारिक भवनों को जितना सजाया–धजाया, मानसिक एवं बौद्धिक भवन उतने ही कृशकाय, निष्प्रभावी एवं निस्तेज हो गए। पहले प्रकार के भवनों में सौंदर्य–प्रसाधनों से जितनी चमक–धमक आई, उतनी ही मन के भवनों की स्थिति जर्जर होती चली गई। यदि सांसारिकता में प्राण एवं ऊर्जा होती तो उसकी समृद्धि, महक, खाद–पानी से मन का भवन फलता–फूलता ही नहीं, बल्कि हर क्षण खिलखिलाता रहता।

ज्ञानवान प्रकृति का यही नियम है कि बाह्य जगत का जितना अधिक विस्तार होता रहता है, अंतर्जगत उतना ही अधिक संकुचित होता चला जाता है। दोनों में अजीब विरोधाभास है। आज मनुष्य बाहर के संसार एवं पदार्थों से जितनी अधिक तीव्रता से आनंद बटोरने का प्रयास करने लगा है, उतनी ही तीव्र गति से उस क्षणिक आनंद में ऊब, निराशा, पश्चाताप एवं असंतोष के भावों की सृष्टि होने लगती है। और मनुष्य फिर स्वयं को उसी संताप के गहन एवं डरावने मोड़ पर खड़ा पाता है जहां से उसने यह तथाकथित आनंद की बेल बोई थी।

मानव सृजित कल्पित सुखों के तालाब में अतिशीघ्र ही दुखों की लंबी–लंबी जोकें लपलपाने लगती हैं जो प्रत्यक्ष एवं परोक्ष रूप में उसी की रक्तशिराओं का भक्षण करती हैं। सुख की प्रत्याशा से बोई गई सभी चाहत की बेलों पर तन–मन वेधी पुष्प एवं कंटक उग कर पग–पग पर जीव को गहन वेदना देकर चेताते रहते हैं, लेकिन अभिशप्त जीव तब भी अपनी अज्ञानता के अहम में फंसा इनमें लाभ पाने के दूसरे मार्ग ढूंढता रहता है। सांसारिक तृष्णाओं की हर डोर जीव को गहरी चुभन एवं पीड़ा देकर उसे सावधान करती रहती है, लेकिन कामनाओं के दल–दल में फंसा जीव दुष्कर्मों के प्रभाव के कारण सत्य को झूठ एवं झूठ को सत्य समझ कर ही जीवन का दुर्लभ समय नष्ट करता रहता है। संसार के भवन होकर भी न होने का बोध कराते हैं, जबकि प्रभुनाम स्मरण का भवन भौतिक रूप में न होकर भी सदैव होने का बोध कराता रहता है।

14/10/2019 साभार दैनिक जागरण

❑

जल संरक्षण के प्रति जागरूक करने का संकल्प लिया

राष्ट्रीय जल संरक्षण समिति कोटद्वार द्वारा लकड़ीपड़ाव स्थित सोफिया स्कूल में जल बचेगा कल बचेगा शीर्षक को लेकर एक जनसभा का आयोजन किया गया। जिसमें लोगों को जल संरक्षण के प्रति जागरूक करने का संकल्प लिया गया। इस मौके पर समिति के राष्ट्रीय अध्यक्ष मनोज चौधरी ने बढ़ती जल की समस्या को देखते हुए सभी को जल संरक्षण के प्रति जागरूक फैलाने की अपील की। समिति के राष्ट्रीय कार्यकारिणी की सदस्य अनीता शर्मा ने कहा कि धरती माता ने सदैव हमारी रक्षा की है, जबकि मानव जाति ने अपने हितों के लिए जरूरत से ज्यादा प्राकृतिक संसाधनों का दोहन किया है। उन्होंने कहा कि जल एक प्राकृतिक संसाधन है जो सभी जीवन रूपों की आधार शिला है, जिसको संरक्षित किये जाने की जरूरत है। वहीं संजय थपलियाल ने कहा कि पृथ्वी पर जीवन का पहला रूप पानी में पैदा हुआ था और पानी आज भी जीवन का आधार है। लेकिन मनुष्यों ने नदियां व समुद्र को दूषित करने के साथ ही भूमिगत जल के स्तर को बिगाड़ दिया है, उन्होंने कहा कि अगर जल का दुरुपयोग ऐसा ही होता रहा तो वो दिन दूर नहीं जब धरती से पीने लायक पानी खत्म हो जायेगा। इस अवसर पर प्रवेन्द्र राणा, अमित कर्णवाल, रवि अग्रवाल, अभिषेक जैन, जितेन्द्र गोस्वामी, सिद्धी कोटनाला, अनिता पाण्डेय, गोविन्द डंडरियाल, शशि नैनवाल, प्रकाश टम्टा, दलीप चौहान, परशुराम आदि मौजूद रहे।

हिन्दुस्तान टीम, कोटद्वार

बच्चे बोले रोज बचाएंगे एक लीटर पानी

गुरुवार को लक्सर क्षेत्र के दो स्कूलों के करीब 1500 बच्चों ने हिमालय की रक्षा का संकल्प लिया। इसके बाद अध्यापकों ने बच्चों को पॉलीथिन से पर्यावरण को होने वाले नुकसान और इससे बचाव के तरीके बताए। इस दौरान जमदग्नि पब्लिक स्कूल के बच्चों ने धरती पर पीने के पानी की कमी को देखते हुए रोज कम से कम एक लीटर पानी बचाने की शपथ भी ली। गुरुवार सुबह पीपली स्थित जमदग्नि पब्लिक स्कूल के 1250 बच्चों ने प्रार्थनासभा के बाद हिमालय की रक्षा करने की शपथ ली। इस मौके पर प्रधानाचार्य मीनू शर्मा ने कहा कि पॉलीथिन पर्यावरण के लिए सबसे बड़ा खतरा है। हिमालय पर्वत को भी पॉलीथिन से बड़ा नुकसान हो रहा है। अगर इसे लेकर हम अब भी सचेत नहीं हुए तो आने वाली पीढ़ी का जीवन खतरे में पड़ जाएगा। उन्होंने पॉलीथिन के प्रयोग को सख्ती से रोकने की भी आवश्यकता जताई। साथ ही उन्होंने धरती पर पीने के पानी की हो रही कमी के बारे में बच्चों का अवगत कराया और पानी बचाने की सलाह दी। इस दौरान स्कूल के बच्चों ने संकल्प लिया कि वे अपने घर पर रोज कम से कम एक लीटर पानी जरूर बचाएंगे। इस मौके पर अभिषेक जमदग्नि, मीना ठकराल, अंशु, पूजा रस्तोगी आदि शिक्षक, शक्षिक्षिकाएं मौजूद रहे। उधर ढाढे की गांव स्थित गायत्री पब्लिक स्कूल के ढाई सौ बच्चों ने भी गुरुवार को हिमालय की रक्षा करने और पॉलीथिन का प्रयोग न करने की शपथ ली। प्रधानाचार्य रमन शर्मा ने कहा कि बच्चों को पर्यावरण संतुलन के प्रति छोटी उम्र से ही जागरूक करना होगा तभी पर्यावरण असंतुलन को रोका जा सकता है। इस मौके पर प्रबंधक सतीश शर्मा, रजनी, संगीता, आकांक्षा, अंकुश, जुल्फिकार, हिमानी, सुधा, रितु, शालू, पूजा, कोमल, मिथलेश आदि मौजूद थे।

हिन्दुस्तान टीम, रुड़की

❑

प्रत्येक व्यक्ति का संवैधानिक कर्तव्य है पर्यावरण संरक्षण

जासं, लखनऊ :– पारिस्थितिकी तंत्र में सभी वन्य प्राणियों की अहम भूमिका है। पर्यावरण संरक्षण प्रत्येक व्यक्ति का संवैधानिक कर्तव्य है। पारिस्थितिकी तंत्र को बचाने के लिए ज्ञान, व्यवहार, कौशल व पर्यवेक्षण की आदत विकसित करनी होगी। वन्य प्राणियों के प्रति संवेदनशीलता पैदा करना ही वन्य प्राणि सप्ताह का उद्देश्य है। यह बातें पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन विभाग की प्रमुख सचिव कल्पना अवस्थी ने कही।

वह सोमवार को नवाब वाजिद अली शाह प्राणि उद्यान में चल रहे वन्य प्राणि सप्ताह 2019 के समापन समारोह में बोल रहीं थीं। सप्ताह के अंतिम दिन प्रतियोगिता के विजेताओं के संग उत्कृष्ट काय करने वाले वनाधिकारियों व वन कर्मियों को सम्मानित कर उनका हौसला बढ़ाया। मुख्य वन संरक्षक पीपी सिंह के नेतृत्व में ऑपरेशन गजराज को सफलतापूर्वक करने वाली टीम के सदस्यों को अनिरुद्ध भार्गव ट्रॉफी देकर सम्मानित किया गया। प्रधान मुख्य वन संरक्षक एवं विभागाध्यक्ष पवन कुमार ने कहा कि विचारों व कल्पनाओं को शामिल कर हम वन्य प्राणि संरक्षण का लक्ष्य प्राप्त करने में सफल हो सकते हैं। वन्य प्राणियों को स्वस्थ व संक्रमण मुक्त रखने के लिए प्राणि उद्यान को साफ–सुथरा रखने, रसोईघर को अंतरराष्ट्रीय मानकों के अनुरूप बनाने के साथ वन्य प्राणियों को संक्रमण मुक्त रखने के लिए दस किलोमीटर तक के निवासियों को अपने पालतू पशुओं को कैनाइन डिस्टेंपर को टीका लगवाने की अपील की। उन्होंने भविष्य में हिरन बाड़े को लेजर फेंसिंग व इंटरपोल द्वारा शिकारियों को पकड़ने के लिए आधुनिक तकनीक के प्रयोग कर उल्लेख कर मुख्य वन सरंक्षक रमेश कुमार पांडे को संयुक्त राष्ट्र संघ की ओर से एशिया इंवायरमेंट इंफोर्समेंट पुरस्कार दिए जाने पर प्रसन्नता व्यक्ति की। प्रधान मुख्य वन संरक्षक वन्यजीव सुनील पांडे ने कहा कि सतत विकास के लक्ष्यों में प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण

शामिल हैं। इन संसाधनों को भावी पीढ़ी के लिए संरक्षित रखना हमारा कर्तव्य है। प्राणि उद्यान निदेशक आरके सिंह ने बताया कि वन्य प्राणि सप्ताह में पांच नयी प्रतियोगिताएं हुईं। इसबार प्रतियोगिताओं में 212 विद्यालयों के आठ हजार से अधिक बच्चों ने शामिल होकर प्राणि उद्यान की निःशुल्क सैर की।

08/10/2019 साभार दैनिक जागरण

पानी बचाने के लिए अब "भूजल दोहन पर वार" मुहिम

लखनऊ :– यदि हम दोहन पर छोड़ा सा भी अंकुश लगा लें तो बड़ी मात्र में भूजल को बचाया जा सकता है। करना कुछ ज्यादा नहीं है। बस सबमर्सिबिल और नलकूपों को चलाने की अवधि में कुछ कटौती करनी है। यानी यदि नलकूप दो घंटे चलाया जाता है तो उसे डेढ़ घंटा ही चलाएं। यदि आप अपने घर का सबमर्सिबिल पंप हर रोज चार घंटे चलते हैं तो एक घंटे कम चलाएं। इससे भूजल दोहन कम होगा और बगैर किसी अतिरिक्त प्रयास के भूजल संरक्षण सुनिश्चित किया जा सकेगा।

ग्राउंड वॉटर एक्शन ग्रुप द्वारा शुरू की गई मुहिम 'भूजल दोहन पर वार' (स्ट्राइक ग्राउंड वाटर एक्सट्रैक्शन) अधाधुंध भूजल दोहन के बढ़ते चौतरफा संकट से निपटने के लिए एक शुरुआत है। ग्रुप के संयोजक आरएस सिन्हा कहते हैं कि विभिन्न स्तरों पर चल रहे हैं जल संरक्षण के तमाम कार्यक्रमों से थोड़ा भिन्न है, जिसमें बगैर कोई धन व्यय किए भूजल का संरक्षण किया जा सकेगा।

सिन्हा कहते हैं कि आज लोगों में जल संचयन के प्रति जागरूकता बढ़ी है। यदि जनमानस के साथ–साथ जलकल विभाग व आवासीय सोसाइटी आदि को इस बात के लिए जागरूक किया जाए कि यदि वह भूजल संचयन करना चाहते हैं तो बड़ी आसानी से दोहन को कम करके इसकी पहल कर सकते हैं। प्रयास है कि शहर, राज्य अथवा राष्ट्रीय स्तर पर लोगों को जोड़ कर भूजल के वर्तमान दोहन में 10 से 20 फीसद तक भी कमी लाई जा सके तो यह भूजल संकट के हल की दिशा में एक महत्वपूर्ण पहल होगी।

08/10/2019 साभार दैनिक जागरण

एक संक्रामक मुस्कान

प्रवीण झा

किसी पढ़ाकू को देख मन पूछता है कि इसे मिला क्या? लेकिन उसकी मुस्कान मुझे लाजवाब कर देती है।

यहां (नॉर्वे) पुस्तकालय में कुछ लोग नियमित दिखते हैं, किसी भी अन्य पुस्तकालय की तरह। कुछ सीजनल हैं, विद्यार्थी होंगे। लेकिन एक बुजुर्ग की टाइमिंग मुझसे मिलती है, और वह हर बार नजर आते हैं। कभी अखबार पढ़ते, कभी किताबें टटोलते, कभी पुस्तकालयाध्यक्ष की डेस्क पर बतियाते। मैंने उनसे कभी पूछा नहीं कि वह कौन हैं, पर वह नियमित गार्डेनिंग सेक्शन में जाते हैं और इतिहास की किताब खूब पढ़ते हैं। और इसलिए भी हम दोनों पुस्तकालय के एक खाने में टकराते रहते हैं। उनकी उम्र मुझसे लगभग दोगुनी होगी, और वह डॉक्टर तो नहीं ही हैं, तो उन्होंने मुझसे दोगुने से अधिक इतिहास आदि पढ़ा ही होगा। सोचता हूं कि उन्हें इतना पढ़कर मिला क्या? जिस व्यक्ति की ऐसी आदत है, वह छुटपन से ही पुस्तकालय आ रहा होगा। वह पुस्तकालयाध्यक्ष के टेबल पर पूछते नजर आते हैं– फलां किताब आई या नहीं? मैं सोचता हूं कि हजारों किताबें पड़ी हैं, वह पढ़ लो। यह फलाने किताब का क्या शगल है? लेकिन उनका यही कौतूहल है। जैसे हम नए गैजेट का इंतजार करते हैं, नए आइफोन का, वह नए किताब का। ऐसा नहीं कि सब पढ़ चुके, लेकिन फिर भी। और रही बात कि उन्हें मिला क्या? इस बात का उत्तर उनकी मुस्कान में है, जो पुस्तकालय के अंदर आते ही नजर आती है। एक संक्रामक मुस्कान!

समाचार

बीमारी से बचाना है तो बच्चों को मोबाइल और टीवी से दूर रखें

बेढंगी जीवनशैली में बहुत से लोगों को पता ही नहीं कि वह मानसिक रोगी हैं। यह बीमारी वयस्कों के साथ बच्चों में भी बढ़ रही है। बच्चा अवसाद में आकर खुदकुशी तक कर लेता है। यह जानकारी बुधवार को सीएमओ डॉ. नरेंद्र अग्रवाल ने दी। बुधवार को सीएमओ कार्यालय में नोडल शिक्षकों की कार्यशाला हुई।

बदलती जीवनशैली भी जिम्मेदार केजीएमयू मानसिक रोग विभाग के प्रमुख डॉ. पीके दलाल ने बताया बहुत से बच्चों में तनाव की समस्या देखने को मिलती है। बदलती जीवन शैली, जंक फूड का सेवन, व्यायाम की कमी, देर तक टीवी व मोबाइल का प्रयोग, आउटडोर एक्टिविटी का अभाव ऐसे कारण हैं, जो तनाव को जन्म देते हैं। राज्य स्तरीय मानसिक स्वास्थ्य अधिकारी डॉ. सुनील पांडे ने बताया यूपी के 43 जिलों में मानसिक स्वास्थ्य कार्यक्रम चल रहा है।

स्वास्थ्य सलाह मुफ्त महिला अस्पतालों में मानसिक विकास पर जोर देने के लिए इस साल गर्भ संस्कार आरंभ किया गया है। गर्भवती महिलाओं को योग, संगीत व प्रेरक बातों के बीच रखने से मां व गर्भस्थ शिशु के मानसिक विकास में वृद्धि होती है। झलकारीबाई अस्पताल की मुख्य चिकित्सा अधीक्षिका डॉ सुधा वर्मा ने बताया कि अस्पताल में जच्चा–बच्चा के मानसिक स्वास्थ्य को दुरुस्त रखने के लिए इस साल ही गर्भ संस्कार कक्षा की शुरुआत की गई है।

तनाव से गर्भपात का खतरा गर्भावस्था में तनाव से गर्भस्थ के मस्तिष्क व दिल पर नकारात्मक असर पड़ता है। गर्भवती को बीपी होने का खतरा, गर्भस्थ को मानसिक विकृति व दिल का दौरा आदि समस्याएं हो सकती हैं। गर्भपात का कारण बन सकता है। मनोचिकित्सक डॉ शाश्वत सक्सेना ने बताया कि गर्भावस्था व प्रसव के बाद महिला को तनाव हो सकता है। इसमें महिला को अचानक रोना, नींद न आना, शिशु के बारे में अधिक चिंता करना आदि मानसिक अवसाद के लक्षण हैं। तनाव होने पर योग करें, संतुलित आहार लें।

(09/10/2019 साभार–हिन्दुस्तान)

सीएमओ कार्यालय में बुधवार को विचार व्यक्त करते हुए डॉ. पीके दलाल

भाऊराव देवरस सेवा न्यास

सी–91, निराला नगर, लखनऊ – 226020 (उ.प्र.)

फोन–फैक्स : 0522-4001837, 2789406, E-mail : bdsnyas@yahoo.co.in

सहकार निवेदन

पिछले 24 वर्षों में न्यास के सेवा कार्यों में जो उत्तरोत्तर वृद्धि हुयी है, उसमें किसी न किसी रूप में आपका ही स्नेह सहयोग रहा है। न्यास के पास आर्थिक संसाधनों की बहुत कमी है। न्यास द्वारा संचालित सेवा कार्य प्रभावित न हो अतः आयस्रोत को बढ़ाना होगा। न्यास द्वारा प्रस्थापित **कार्पस फण्ड** से प्राप्त होने वाली ब्याज राशि भी पूरी नहीं होती। अतएव लक्ष्य तक पहुँचने हेतु कार्पस फण्ड भी बढ़ाना होगा। समाज सेवा के क्षेत्र में गौरव को बढ़ाने वाले इस महत कार्य में जन-जन का सहयोग एवं सहकार अपेक्षित है। आप सभी उदारमना सेवाभावी महानुभावों के सहकार से ही यह न्यास सेवारत है।

न्यास के सेवा कार्यों हेतु आप इस प्रकार से सहयोग कर सकते हैं–

1. **सचल चिकित्सा सेवा के लिए**– रु. 11,000/- की मासिक धनराशि का सहयोग करके, एक सेवा बस्ती में अपनी ओर से निःशुल्क चिकित्सा सुविधा एवं औषधि का वितरण कराना।
2. **नेत्र चिकित्सा शिविर के लिए**– रु. 2000/- की धनराशि का सहयोग करके एक **मोतियाबिन्द पीड़ित** नेत्र रोगी का आपरेशन करवाकर नेत्र ज्योति प्रदान करना।
3. **विकलांग सहायता शिविर के लिए**– रु. 1,000/- से 6,000/- तक की राशि दे करके, एक विकलांग बन्धु की सहायता में उनके लिए कृत्रिम अंग, उपकरण, वैशाखी, ट्राईसाइकिल, ह्वील चेयर आदि की व्यवस्था कराना।
4. **कार्पस फण्ड (स्थायी निधि) के लिए**– रु. 10,000/- से अधिक की धनराशि का अर्पण करके, न्यास द्वारा संचालित सेवा कार्यों में उत्प्रेरक बनना।
5. **छात्रवृत्ति के लिए**– प्राथमिक रु. 3000/-, माध्यमिक रु. 5000/-, हाईस्कूल रु. 7000/-, इंटरमीडिएट रु. 8000/-, आईटीआई/डिप्लोमा रु. 10,000/-, स्नातक रु. 10000/-, परास्नातक रु. 12000/-, प्रतियोगी परीक्षाएँ रु. 15000/-, इंजीनियरिंग रु. 18000/- मेडिकल के छात्रों को रु. 20000/- की वार्षिक छात्रवृत्ति का सहयोग करके न्यास के माध्यम से पूर्वांचल और वनवासी क्षेत्र के बालकों के लिए वार्षिक छात्रवृत्ति भिजवाना।
6. **सेवा चेतना अर्द्धवार्षिक पत्रिका के लिए**– रु. 1,200/- की आजीवन सदस्यता ग्रहण करके तथा पत्रिका की विज्ञापन दरों के आधार पर अपनी क्षमतानुसार विज्ञापन के रूप में सहयोग करके सहायता करना।
7. **सेवा संवाद मासिक के लिए**– रु. 2,000/- की आजीवन एवं रु. 5,000/- की संरक्षक सदस्यता ग्रहण करके सहयोग करना।
8. **माधव सेवा आश्रम के लिए**– रु. 5,00,000/- का दान कर, एक कक्ष के निर्माण के द्वारा अपने किसी सम्बन्धी की स्मृति को स्थायी बनायें।

न्यास को सेवा कार्यों के लिए दिया गया दान आयकर अधिनियम की धारा 80G(5)(vi) के अन्तर्गत नियमानुसार करमुक्त है। अप्रवासी भारतीय भी दान दे सकते हैं। कृपया अपनी दानराशि चेक व ड्राफ्ट **भाऊराव देवरस सेवा न्यास** के पक्ष में जो **लखनऊ** में देय हो, अपने पैन नं. व पते के साथ भेज सकते हैं।

समाज सेवा-कार्यों हेतु आपसे अनुरोध है कि न्यास को यथा सम्भव अधिकाधिक सहयोग करें। दान की राशि आप सीधे हमारे खाते में भी जमा कर सूचित कर सकते हैं।

बैंक ऑफ इण्डिया, निरालानगर, लखनऊ बैंक खाता सं. **680610100009948 IFSC: BKID0006806**

भारतीय स्टेट बैंक, निरालानगर, लखनऊ बैंक खाता सं. **30448433657 IFSC: SBIN0003813**

आशा है सेवा के इस पुनीत कार्य में आप सभी अवश्य सहभागी बनेंगे।

पावन स्मृति

(पुण्य भूमि भारत में जन्म लेकर जिन्होंने जीवन पर्यन्त मानव की सेवा और मानवता की रक्षा में अपना सर्वस्व समर्पित कर कीर्तिमान स्थापित किया, अपने बहुआयामी कार्यों द्वारा जीवन के विविध क्षेत्रों में आलोक स्तम्भ बनकर हमारा मार्ग दर्शन किया तथा जो आज भी हमारे प्रेरणा स्रोत हैं ऐसे उन तमाम दिव्य महापुरुषों की पावन स्मृति में श्रद्धा सुमन समर्पित है–सम्पादक)

दिनांक	दिवस	महापुरूष का नाम
1 नवम्बर	बलिदान–दिवस	सन्त कँवरराम का बलिदान दिवस
2 नवम्बर	जन्म–दिवस	भारत के अन्तिम हिन्दू सम्राट : सहाराजा रणजीत सिंह
3 नवम्बर	बलिदान–दिवस	प्रथम परमवीर चक्र विजेता : मेजर सोमनाथ शर्मा
4 नवम्बर	पुण्य–तिथि	हिन्दी समय सारिणि के निर्माता : मुकुन्ददास 'प्रभाकर'
7 नवम्बर	जन्म–दिवस	श्री माधवराव मुले
7 नवम्बर	इतिहास–स्मृति	गोवंश रक्षा हेतु महान आन्दोलन
9 नवम्बर	पुण्य–तिथि	समाज सेवी महर्षि कर्वे
10 नवम्बर	बलिदान–दिवस	अमर हुतात्मा : भाई मतिदास, सतिदास एवं दयाला
11 नवम्बर	बलिदान–दिवस	धर्म–रक्षा हेतु बलिदान : गुरू तेग बहादुर
13 नवम्बर	जन्म–दिवस	वनवासियों के सच्चे मित्र : भोगी लाल पाड्या
14 नवम्बर	जन्म–दिवस	वनस्पति शास्त्री : बीरबल साहनी
15 नवम्बर	जन्म–दिवस	क्रान्तिकारी शिक्षक : गिजूभाई
16 नवम्बर	बलिदान–दिवस	भगत सिंह के प्रेरणा स्रोत : करतार सिंह सरावा
17 नवम्बर	बलिदान–दिवस	पंजाब केसरी : लाला लाजपत राय
18 नवम्बर	जन्म–दिवस	परोपकार की प्रतिमूर्ति : स्वामी प्रेमानन्द
19 नवम्बर	पुण्य–तिथि	निरासक्त सन्त : देवरहा बाबा
19 नवम्बर	जन्म–दिवस	विवेकानन्द शिला स्मारक के शिल्पी : एकनाथ रानाडे
22 नवम्बर	जन्म–दिवस	विरांगना झलकारी बाई
23 नवम्बर	जन्म–दिवस	कर्मयोगी गोविन्द राव कात्रे
24 नवम्बर	पुण्य–तिथि	केरल में धर्म रक्षक : स्वामी सत्यानन्द सरस्वती
25 नवम्बर	पुण्य–तिथि	त्रिपुरा में नर बली का अन्त
28 नवम्बर	जन्म–तिथि	क्रान्तिकारी भाई हिरदा राम
29 नवम्बर	जन्म–दिवस	वनवासियों के सेवक : ठक्कर बाबा
30 नवम्बर	पुण्य–तिथि	क्रान्ति कथाओं के गायक : वचनेश त्रिपाठी

मनुष्यों को चाहिए कि सब ऋतुओं में सुख–कारक, धनधान्य से युक्त, वृक्ष, पुष्प, फल, शुद्ध वायु, जल तथा धार्मिक और धनाढ्य पुरुषों से युक्त गृह बनाकर वहां निवास करे, जिससे आरोग्य से सदा सुख बढ़े।

ऋग्वेद

बलदा हाउस जश्न और भिखारी

एक कम्पनी की कहानी, जिसने अपने कर्मचारियों की संवेदना परखने के लिए एक अनूठा तरीका अपनाया।

बलदा हाउस उस दिन खचाखच भरा था। हो भी क्यो न, कम्पनी की पचासवीं सालगिरा जो थी। किराऐ एक कमरे से शुरू हुई कंपनी अब सौ करोड़ की हो चुकी थी इस का जश्न मनाने कंपनी ने अपने सभी कर्मचारियों को बालदा हाउस बुलाया था। उसी दिन कंपनी के नए मैनेजिंग डायरेक्टर का भी ऐलान होना था। खुशी–खुशी सभी लोग एक बड़े से हॉल मे प्रवेश कर रहे थे। पर हॉल के ठीक बाहर एक फटा–सा कंबल सिर पर ओढ़े एक बिखारी बैठा हुआ था, जो खुशनुमा माहौल का मजा किरकिरा कर रहा था। कोई उसे दुत्कार देता, तो कोई मुंह बनाकर वहां से चला जाता। कुछ ने तो उसे ठोकर भी मारी। ऐसा एक भी व्यक्ति नहीं था, जिसने उसकी तरफ गौर से देखा हो। कुछ देर में हॉल के दरवाजे बंद हो गए और कार्यक्रम की शुरूआत हुई। सरस्वती वंदना और कुछ नृत्य नाटक के कार्यक्रम के बाद कंपनी के एक आला अधिकारी ने नए मनैजिंग डायरेक्टर को मंच पर बुलाया। हॉल में एकदम सन्नाटा छाया था। तभी पीछे से वही भिखारी मंच की तरफ बढ़ने लगा। सबकी नजरे उस भिखारी पर टिकी थी लोग सोच रहे थे, क्या यही है नया मैनेजिंग डायरेक्टर। मंच पर आकर वह शख्स बोला मेरा नाम महेश शर्मा है और मैं आपका नया मैनेजिंग डायरेक्टर हूँ वहाँ बैठे सारे कर्मचारी सकपका गए, क्योकि उनमें से कोई ने थोड़ी देर पहले ही उसे दुत्कारा था। महेश बोले, मुझे पता है कि आप में से कई लोग सोच रहे होंगे कि मैने ये वेशभूषा क्यों धारण? बस, दूसरों के प्रति आपकी संवेदना परखने के लिए। मैं आप सब से बस इतना कहना चाहूंगा कि भले ही हमारे कर्म कोई न देख रहा हो, लेकिन अपना उत्तरदायित्व समाज और किसी अन्य व्यक्ति के लिए नही, बल्कि सिर्फ अपने आप के लिए होता है।

केवल वैसा ही कर्म किजिए,जिसका आप खुद को उत्तर दे सकें।

10.10.2019 साभार अमर उजाला

भाऊराव देवरस सेवा न्यास द्वारा प्रकाशित मासिक पत्र

सेवा संवाद

सम्पादकीय कार्यालय : भाऊराव देवरस सेवा न्यास

सी-91, निरालानगर, लखनऊ-226020

दूरभाष : 0522-4001837, 2789406 मोबाइल : 9793120738

Email : sewasamwad@gmail.com

ग्राहक सदस्यता प्रपत्र

सेवा में,

प्रबन्धक,
'सेवा संवाद'
भाऊराव देवरस सेवा न्यास
सी-91, निरालानगर, लखनऊ-226020

महोदय,

मैं/हमारी संस्था आपकी मासिक पत्रिका सेवा संवाद का वार्षिक/जीवन सदस्य बनने का इच्छुक हूँ/हैं। इस निमित्त वार्षिक शुल्क **200/-** अथवा आजीवन शुल्क **2000/-** रुपये **'सेवा संवाद'** के पक्ष में नकद/बैंक ड्राफ्ट/चेक सं. ..... दिनांक ..... बैंक .... द्वारा भेज रहा हूँ/रहे हैं। कृपया स्वीकारें। प्राप्ति की रसीद तथा पत्रिका हमारे निम्न पते पर प्रेषित करने की कृपा करें।

ह0 आवेदक

हमारा पता है :

नाम : .....

पता : .....

.....

.....

जिला: .....

प्रदेश : ..... पिनः .....

मोबाइलः .....

आलोक : चेक/ड्राफ्ट 'सेवा संवाद' के पक्ष में जारी करें अथवा बैंक आफ इण्डिया, निरालानगर, लखनऊ के खाता सं. 680610110000102 (IFSC : BKID0006806) में सीधे जमा कर जमा पर्ची की छायाप्रति के साथ सूचित करें।

नई धरती-नया आकाश

□ डॉ राजकुमार पाण्डेय 'कुमार'

आए ले हमारी प्रीति हम तैयार हैं।
मृत्यु की भी न जिसको भीति आए ले
हमारी प्रीति हम तैयार हैं।

चाहता हूँ स्वर्ग से अमरत्व को लाऊँ धरा पर खींच।
चाहता हूँ विश्व की मरुभूमि को दूँ आँसुओं से सींच।

चाहता हूँ मैं बुझा दूँ यह विषमता की धधकती आग।
चाहता हूँ विश्व–पट से मैं मिटा दूँ रक्त के यह दाग।

यह मनुजता जो सतत देवत्व की पर्याय–
चाहता हूँ यह मनुष्य की अर्चना बन जाए।

आ न पाए फिर मरण त्यौहार जीवन–पर्व के उपरान्त।
चाहता हूँ हो न मानव मृत्यु से पंचत्व से भी क्लाँत।

सृष्टि में जो कुछ अशिव का तत्व है परिव्याप्त।
वेदना–वैषम्य का, नैराश्य का उत्पात।

चाहता हूँ मैं इसे शिव–सप्त में अनुरक्त में दूँ ढाल,
हो न मानव–चेतना पशु–वृत्ति से पामाल।

पाषाण की पूजा बहुत कुछ की उपेक्षित हो रहा इन्सान।
राष्ट्र की बगिया इसी से आज तक वीरान–

हो नया निर्माण मानव का, नए युग का नया इतिहास।
चाहता हूँ प्राण–पण से मैं नई धरती, नया आकाश।

मुक्त गाए गए मनुज जो मुक्ति के पदगीत, आए ले
हमारी प्रीति हम तैयार हैं।
मृत्यु की भी हो न जिसको भीति आए ले
हमारी प्रीति हम तैयार है।

एम्स पावर ग्रिड विश्राम सदन सफदरजंग, नई दिल्ली में प्रान्तशः ठहरने वाले लाभार्थियों की संख्या

1 अप्रैल 2019 से 30 सितम्बर 2019 तक

भारतीय राज्य/देश	अगस्त 2019 तक	सितम्बर 2019	कुल योग 2019–20
बिहार	1866	350	2216
उत्तर प्रदेश	1620	242	1862
मध्य प्रदेश	344	41	385
झारखण्ड	272	65	337
राजस्थान	244	31	275
पश्चिम बंगाल	227	35	262
उत्तराखण्ड	235	47	282
हरियाणा	131	34	165
नेपाल	189	40	229
उड़ीसा	57	8	65
जम्मू और कश्मीर	105	17	122
छत्तीसगढ़	26	2	28
असम	35	6	41
गुजरात	14	00	14
हिमाचल प्रदेश	09	2	11
महाराष्ट्र	13	00	13
दिल्ली	26	3	29
त्रिपुरा	14	3	17
पंजाब	17	00	17
मनीपुर	00	00	00
अरुणाचल प्रदेश	08	00	08
आंध्र प्रदेश	00	00	00
चंडीगढ़	00	00	00
केरल	16	2	18
सिक्किम	07	00	7
तेलंगाना	00	00	00
बांग्लादेश	00	00	00
तमिलनंडु	10	9	19
अफ़गानिस्तान	00	00	00
मिजोरम	00	2	2
कुल	5485	939	6424

भाऊराव देवरस सेवा न्यास द्वारा "पं. प्रताप नारायण मिश्र स्मृति युवा साहित्यकार सम्मान" 2019

साहित्यकार लेखनी से धारा बदल सकते हैं : डॉ. शर्मा

साहित्यकार अपनी लेखनी से देश की धारा को बदलने में समर्थ होते हैं। इसलिए साहित्यकारों का सम्मान करना समाज का कर्तव्य है। साहित्यकार का सम्मान देश का सम्मान है। यह विचार उपमुख्यमंत्री डॉ. दिनेश शर्मा ने माधव सभागार, निरालानगर में गुरुवार को व्यक्त किए। वह भाऊराव देवरस सेवा न्यास की ओर से 25वें पंडित प्रताप नारायण मिश्र स्मृति युवा साहित्यकार सम्मान समारोह में बतौर मुख्य अतिथि मौजूद थे।

उन्होंने कहा कि समाज के लिए सर्वस्व त्याग करने की परंपरा भाऊराव देवरस और पंडित प्रतापनारायण दोनों में थी। प्रताप नारायण मिश्र ऐसे साहित्यकार थे जिन्होंने समाज को जोड़ने व प्रेरणा देने वाले साहित्य की रचना की। डॉ. शर्मा ने कहा कि न्यास सेवा, साहित्य, शिक्षा, स्वास्थ्य के क्षेत्र में अनुकरणीय कार्य कर रहा है। समारोह की अध्यक्षता कर रहे कैबिनेट मंत्री डॉ.महेंद्र सिंह ने कहा कि साहित्य समाज का दर्पण है। इसका काम रास्ता दिखाना है न कि रास्ता भटकाना। साहित्य जीवन जीने की कला सिखाती है। उन्होंने कहा कि शब्द कभी मरता नहीं है। अतः उसका उपयोग कर जो सत साहित्य रचा जाता है तो उस साहित्य के रचनाकारों की भी कभी मृत्यु नहीं होती है। कार्यक्रम संयोजक डॉ.विजय कर्ण ने कार्यक्रम की पृष्ठभूमि बताते हुए कहा कि न्यास प्रति वर्ष छह साहित्यकारों का सम्मान करता है। कार्यक्रम में सांसद डॉ.अशोक बाजपेयी, कुलपति प्रो संजय सिंह, बीएम सिंह, रंजीत तिवारी समेत बड़ी संख्या में लोग उपस्थित रहे।

इनको मिला पुरस्कार काव्य विधा में लखनऊ के विश्व भूषण मिश्र, कथा–साहित्य में सीतापुर के राहुल देव, पत्रकारिता में लखनऊ के हिमांशु सोनकर, बाल साहित्य में लखनऊ के डॉ.प्रवीण त्रिपाठी बसंत, संस्कृत में रायपुर की डॉ. कादम्बरी शर्मा व मराठी में नागपुर की डॉ. जयश्री शास्त्री को सम्मानित किया गया।

❑

नि:शुल्क अस्पताल खोलने के लिए बेचनी पड़ी सब्जियां

सुभाषिनी मिस्त्री

मेरी उम्र तब 12 वर्ष थी जब मेरा विवाह हुआ। विवाह के 12 वर्ष बीतने तक मैं चार बच्चों की मां बन गई। हमारा परिवार बेहद गरीबी में जी रहा था। मैं और मेरे पति प्रतिदिन संघर्ष के बाद जिंदगी की गाड़ी को पटरी पर लाने की कोशिश कर रहे थे। इस बीच मेरे पति आंत्रशोथ की मामूली–सी बीमारी से ग्रस्त हो गए जिसका इलाज उस समय भी सम्भव था। किंतु पति की तबीयत ज्यादा खराब होने पर जब मै उन्हे लेकर शहर के एक अस्पताल मे पहुची तो डाक्टरों ने इलाज के लिए पहले पैसे मांगे। उस वक्त मेरे लिए रूपये जुटाना पहाड़ तोड़ने जैसा था मैंने बहुत कोशिश की परन्तु रूपये इकट्ठा न हो सके। अततः उनकी मृत्यु हो गई। मैने तभी संकल्प लिया कि अपने पैसों से गरीबी के लिए एक अस्पताल जरूर बनवाउंगी ताकि गरीबी की वजह से मेरे पति की तरह कोइ और मौत का शिकार न बने। मैं पश्चिम बंगाल के 24 परंगना जिले की रहने वाली हूँ। जब मेरे पति की मृत्यु हुई तो मेरा सबसे बड़ा बेटा चार वर्ष का था जबकि सबसे छोटी बेटी महज डेढ़ वर्ष की थी। पति की मौत के बाद सबसे बड़ी समस्या चार बच्चो को के पालन पोषण की थी। चूकिं मैं पढ़ी–लिखी थी नही जो रोजमर्रा के काम करके थोड़ी–बहुत कमाई करने लगी। मैने प्रण किया कि किसी भी कीमत पर हार नही माननी है। अपने परिवार और संकल्प के लिए आगे बढ़ना है। दिन–रात मेहनत करने के बाद भी जब बच्चों के पालन– पोषण में दिक्कते आने लगी तो मैने दो बच्चों को अनाथालय में भेज दिया। मेरा एक बेटा अजय शुरू से ही होनहार था। उसका मन पढ़ने–लिखने में लग रहा था। दो बच्चों को अनाथालय भेजने के बाद मैने उसकी पढ़ाई–लिखाई पर ध्यान देना शुरू किया। मैंने उसे बचपन से ही डॉक्टर बनने के लिए प्रोत्साहित किया। मुझे उसमें अपने संकल्प को पूरा करने की झलक दिखाने लगी। बेटे को पढ़ाने और अस्पताल बनवाने के लिए ज्यादा पैसों की आवश्यकता थी। ऐसे में दिन भर मजदूरी करने के बाद शाम को सब्जियां बेचने लगी। इस तरह रूपये इकट्ठा करने के बाद मैने हांसपुकुर गांव में एक बीघा जमीन खरीदी। तब तक मेरा बेटा बड़ा हो चुका था। वर्ष 1993 में मैने स्थानीय लोगों की सहायता से हयूमैनिटी ट्रस्ट का गठन किया और एक अस्थायी क्लीनिक की स्थापना की। अस्थायी क्लिनिक खुलने के बाद कई गांवो के लोगो ने अस्पताल निर्माण में योगदान दिया। इस तरह से वर्ष 1996 में अस्पताल के पक्के भवन अस्पताल में काम करना शुरू कर दिया। अब उसी के साथ मैं इसका प्रबंधन देखती हुँ। यहां आने वाले मरीजों का मुफ्त में इलाज किया जाता है। अब तक चंदे और संगठनों से मिलने वाली आर्थिक सहायता से अस्पताल में करीब 25 बिस्तरों की व्यवस्था कर दी गई है। हालांकि अब भी हम डाक्टरों की कमी महसूस कर रहे है क्योकि बेटे के लिए अकेले अस्पताल संभालना मुश्किल हो रहा है। मुझे बेहद खुशी है कि सरकार ने मेरे काम को सम्मान दिया। इसके बावजूद मुझे ज्यादा खुशी तब होगी जब दूसरे लोग मेरे काम से प्रेरणा लेकर समाज की बेहतरी के लिए आगे आएंगे। मुझे तो अपने काम का सम्मान उसी दिन मिल गया था जिस दिन अस्पताल शुरू हुआ था और पहले मरीज का सफलतापूर्ण इलाज हुआ था। मगर मेरा मिशन अभी पूरा नही हुआ है। मरीजों की संख्या को देखते हुए अस्पताल में आईसीयू समेत कई अन्य सुविधाओ डॉक्टरों और कर्मचारियों की जरूरत है। पर मुझे विश्वास है। यहां तक आ गई हूँ तो अब आगे भी कोई न कोई राह जरूर निकलेगी।

पद्मश्री से सम्मानित समाजसेविका के विभिन्न साक्षात्कारो पर अध्यारित।

साभार अमर उजाला

❑

गांधी की खादी को दे दिए "उमंग" भरे नए रंग

मध्य प्रदेश निवासी 27 वर्षीय उद्यमी उमंग श्रीधर ने नई पीढ़ी के बीच गांधी को लौटा लाने की सच्ची कोशिश की है। फोर्ब्स 30 अंडर–30 में जगह बना चुकी उमंग और उनके स्टार्टअप खादिजी ने डिजिटल प्रिंट वाले खादी परिधानों को गांवों के कुटीर उद्योग से निकाल वैश्विक बाजार तक पहुंचा दिया है। यही नहीं, गांधी ने ग्राम स्वराज, कुटीर और नारी सशक्तीकरण का जो पाठ पढ़ाया था, उमंग का यह प्रयास गांधी के हर स्वप्न को साकार करने की ओर बढ़ता दिखता है।

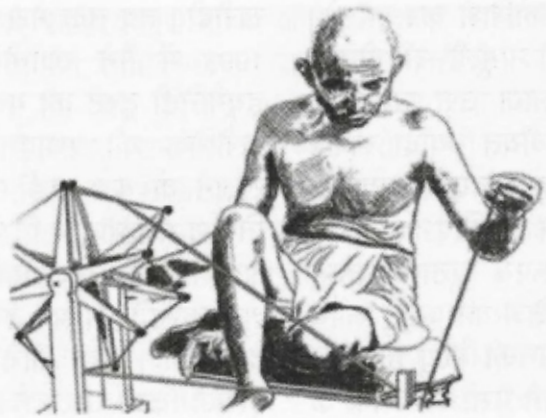

उमंग ने चंबल–नर्मदा किनारे बसे पिछड़े गांवो की सैकड़ो महिलाओं के हाथ में चरखा थमाकर उन्हे स्वाबलंबी बना दिया। कहती है, बदलते परिवेश में लुप्त होती जा रही खादी पर शोध करते है इस निष्कर्ष पर पहुंची कि खादी गुम होने वाली चीज नही है। हां, समय और फैशन की मांग के अनुरूप में इसमें बस कुछ नए प्रयोग की आवश्यकता है। इसे संजोकर नए रूप में दुनिया को दिखाया जा सकता है। इसी अवधारणा पर खादिजी (खादी डिजिटल) की शुरूआत की गई। इंदौर, मध्य प्रदेश के एक छोटे से गांव किशनगंज में जन्मीं और दिल्ली विश्वविद्यालय से स्नातक करने वाली उमंग ने मध्य प्रदेश के जावरा (मुरैना) स्थित गांधी सेवा आश्रम से 2017 में यह प्रयास शुरू किया। खादी को नया स्वरूप और नया बाजार दिलाना ही उनका ध्येय था। इसके बाद जाबरोल, चंदेरी और महेश्वर की 250 महिलाओं की टीम बनाई। कताई, बुनाई, फिनिशिंग, डिजाइनिंग, बिजनेस, प्रोडक्शन और मार्केटिंग तक, सभी जिम्मेदारी महिलाओं को ही दीं। कहती है, अब इसी तर्ज पर 2020 तक मध्य प्रदेश में ऐसे 10 सेंटर स्थापित करने की योजना है। महाराष्ट्र और पश्चिम बंगाल में भी कुछ इकाइयाँ काम कर रही है। उमंग बताती है, मैने दिल्ली विश्वविद्यालय और नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ फैशन टेक्नोलॉजी से पढ़ाई जरूर की, लेकिन ग्रामीण परिवेश में पली–बढ़ी होने की वजह से मुझे यह पता था कि गांव अपनी ही अर्थव्यवस्था पर पुर्ण निर्भर रह सकते है और हर किसी को शहर जाने की जरूरत नहीं है। लिहाजा,पढ़ाई के बाद 2013 में मैनें खडिजी कंपनी शुरू की ताकि गांवों में आय के स्त्रोत विकसित कर बेहतर संभावनाएं तलाश सकूं।

हस्त मुद्रा ज्ञान (सूर्य मुद्रा) मोतियाबिंद में है उपयोगी

मोटापा, कॉलेस्टॉल, मधुमेह, कब्ज और मोतियाबिंद में यह मुद्रा उपयोगी है। सर्दियों में इसे रोज वज्रासन में एक घंटे करने से लगभग 250 ग्राम वजन तुरंत घट जाता है। इससे रक्त में यूरिया पर नियंत्रण होता है और लीवर के सभी रोग, कफ, दमा, सर्दी–जुकाम, न्यूमोनिया, तपेदिक, सायनस आदि दूर होते है। जिनके हाथ–पैर ठंडे रहते है,उनके लिए यह मुद्रा वरदान है। अनामिका के शीर्ष को अंगूठे की जड़ में लगाएं और अंगूठे से अनामिका पर हल्का दबाव बनाएं। शेष तीनों उंगलियां सीधी रखें। प्रातः उठने पर,रात को सोते समय और हर बार भोजन के 5 मिनट पहले तथा 15 मिनट बाद 15–15 मिनट के लिए करें। उच्च रक्तचाप के रोगी इसे कम समय के लिए करें। गर्मी में यह मुद्रा अधिक देर न करें।

भाऊराव देवरस सेवा न्यास स्वास्थ्य सेवा प्रकल्प

(अ) सुदूर ग्रामीण अंचल एवं शहरी क्षेत्र की 6 सेवा बस्तियों में स्वास्थ्य केन्द्रों का संचालन

1 अप्रैल 2019 से 30 सितम्बर 2019 तक लाभान्वित रोगी विवरण

क्र.	सेवा केन्द्र	दिवस	माह जून 2019 में लाभान्वित रोगी	माह जुलाई 2019 में लाभान्वित रोगी	कुल लाभान्वित रोगी
1.	वेदान्त आश्रम, पपनामऊ	सोमवार	271	90	361
2.	सेवा समर्पण संस्थान बिन्दौवा	मंगलवार	960	112	1072
3.	अम्बेदकरनगर	बुधवार	372	54	426
4.	51 शक्तिपीठ (बीकेटी)	गुरुवार	268	49	317
5.	अर्जुनपुर (बीकेटी)	शुक्रवार	00	00	00
6.	माधव सेवा आश्रम	शनिवार	160	55	215
	कुल लाभान्वित रोगी		**2031**	**360**	**2391**
(ब) माधवराव देवड़े स्मृति रुग्ण सेवा केन्द्र, सी-91, निरालानगर, लखनऊ					
1.	एलोपैथिक	प्रत्येक कार्यदिवस	3820	1059	**4879**
2.	होम्योपैथिक	प्रत्येक कार्यदिवस	2429	587	**3016**
	कुल लाभान्वित रोगी संख्या		**6249**	**1646**	**7895**
(स) रुग्ण सेवा केन्द्र, माधव सेवा आश्रम, लखनऊ					
1.	होम्योपैथिक	प्रत्येक कार्यदिवस	**1727**	**330**	**2057**
1 अप्रैल 2019 से 30 सितम्बर 2019 तक			**कुल लाभान्वित रोगी सं.**		**12343**

माधव सेवा आश्रम रायबरेली रोड, लखनऊ में प्रान्तशः ठहरने वाले लाभान्वित बन्धुओं की संख्या

क्र.	सेवा केन्द्र	माह अगस्त 2019 तक	माह सितम्बर 2019 में	योग सत्र 19–20
1.	उत्तर प्रदेश	27413	5850	33263
2.	उत्तराखण्ड	277	01	278
3.	बिहार	20506	3833	24339
4.	झारखण्ड	2886	381	3267
5.	उड़ीसा	390	13	403
6.	मध्य प्रदेश	1417	412	1829
7.	छत्तीसगढ़	206	67	273
8.	राजस्थान/गुजरात	25	22	47
9.	महाराष्ट्र	00	00	00
10.	नेपाल	338	93	431
11.	दिल्ली/पंजाब/हरियाणा	44	04	48
12.	पश्चिम बंगाल	527	94	621
13.	अन्य प्रान्त	452	152	604
	योग	**54481**	**10922**	**65403**

नेत्र कुम्भ चिकित्सालय, सी-136, निराला नगर, लखनऊ संचालन :- किंगजार्ज चिकित्सा विश्वविद्यालय एवं अन्त्योदय हेल्थ मिशन 1 अप्रैल 2019 से 30 सितम्बर 2019 तक लाभन्वित रोगी विवरण

	माह अगस्त 2019 तक	माह सितम्बर 2019	योग सत्र 19–20
नेत्र परीक्षण	**2175**	**303**	**2478**
चश्मा वितरण	**1280**	**139**	**1471**

गांधी : चंपारण की लखनऊ कथा

डा0 तुमुल विजय शास्त्री

गांधी जयंती पर विशेष– बिहार के राजकुमार शुक्ल ने लखनऊ आकर ही पहली बार गांधी को सुनाई थी चंपारण की दर्द भरी दास्तां – उस रोज राजकुमार शुक्ल आंखो में व्याकरण की तस्वीर उतार लाए थे। वजह भले ही अपनी स्थिति थी लेकिन सारे किसानों की शिकायतों का पिटारा गांधी को सुनाने आए थे। यह उस समय की बात है जब गांधीजी दक्षिण अफ्रीका से आने के बाद भारत भ्रमण पर निकले थे और उस समय लखनऊ में थे जब राजकुमार शुक्ल के जरिये चंपारण से पहली बार मिले थे। तब उनके साथ कोई नहीं जानता था कि लखनऊ से उठने वाले कदम देश का इतिहास बदल देगा और मोहनदास करमचन्द्र को महात्मा बना दिया।

जी हां, लखनऊ ही वो शहर है जहाँ चंपारण के बारे में महात्मा गांधी को पता चला। यहाँ कांग्रेस के प्रथम अधिवेशन की तैयारियां चल रहीं थी, गांधी जी के भारत दौरे वाली गाड़ी उस समय यहाँ आकर ठहरी हुई थी, उसी समय उनकी जिन्दगी में भविष्य में इतिहास बनने जा रहा वो पल आया, एक व्यक्ति चंपारण से दर्द भरा संदेश लेकर आया। पढ़िये उनकी आत्मकथा सत्य के प्रयोग का यह अंश–

मुझे यह स्वीकार करना चाहिए कि वहां जाने से पहले मैं चंपारण का नाम तक नहीं जानता था राजकुमार शुक्ल नामक चंपारण के किसान थे। जब मैं लखनऊ कांग्रेस में गया तो वहां इस किसान ने मेरा पीछा किया। वकील बाबू आपको सब हाल बताएंगे – वाक्य वे कहते जाते थे और मुझे चंपारण आने का निमंत्रण देते जाते थे। गांधीजी राजकुमार शुक्ल के प्रति आभार व्यक्त करते हैं, स्वतंत्रता संग्राम के लिए उठाए बड़े कदम को याद करते हुए लिखते हैं–

राजकुमार शुक्ल चंपारण के ब्रजकिशोर बाबू को तंबू में लाए। मैने उनसे चंपारण की पूरी कथा सुनी। अपने रिवाज के अनुसार मैनें जवाब दिया, खुद देखे बिना कोई राय नहीं दे सकता। इसमें वो किस्सा भी है जब समर्पण की एक परिभाषा गांधीजी ने भी सीखी, किसान की लगन देखी, तब कहीं जाकर चंपारन की स्थिति खुद वहां जाकर देखी–

मैने कहा, अपने भ्रमण में चंपारण को भी शमिल कर लूंगा और एक दो दिन वहां ठहरूंगा। उन्होंने कहा एक दिन ही काफी होगा। गांधी लिखते हैं– लखनऊ से कानपुर गया। वहां भी वो हाजिर थे। मैंने कहा, अभी माफ करिए पर मैं वचन देता हूं कि अवश्य पहुंचूंगा। आश्रम गया तो राजकुमार वहां भी थे। बोले, अब तो दिन मुकर्रर कीजिए। मैनें कहा कि फलां तारीख को कलकत्ता जाना है। वहां आइऐ मुझे ले जाइए। वहां भी मुझसे पहले वो मौजूद थे।.....और इस तरह उस ने मुझे जीत लिया। इसके बाद हम दोनों चंपारण के लिए निकल गए।

चंपारण आंदोलन चर्चा

राजा जनक की भूमि चंपारण वैसे तो आम के वनों के लिए मशहूर है। तब वहां नील के खेत थे। चंपारण के किसान अपनी ही जमीन के बहुत छोटे से हिस्से में नील की खेती करने के कनून से बंधे थे। तब बीस कट्टे का एक एकड़ था। तीन कट्टे जमीन में नील बोने की प्रथा को तीन कठिया कहते। गांधी ने वहां के किसानों को जागृत किया। मजबूर होकर अंग्रेजों ने एक आयोग का गठन किया और चंपारण के किसानों को उनके अधिकार मिले।

गोरक्षासन

आंखों और गले के लिए लाभदायक

इस आसन से गले और आंखों के रोग दूर होते हैं। कुत्सित यौन भावनाओं को शांत करने में यह बहुत उपयोगी है। यह आसन शरीर की स्थूलता खत्म करता है। इससे ध्यान लगाने और सिद्धि प्राप्त करने में आसानी हो जाती है। सहज श्वास भरते हुए दोनों एड़ियों को ऊपर की तरफ उठाकर दोनों जांघों और घुटनों के बीच में स्थित करें। इस अवस्था में दोनों पैर के पंजे और एड़ियां परस्पर मिले हुए होंगे और शरीर का पूरा वजन एड़ियों के ठीक बीच में पड़ेगा। अब बाएं हाथ से दाईं एड़ी और दाएं हाथ से बाईं एड़ी को पकड़ें तथा सासं रोकते हुए गले को सिकोड़े और अपनी नजर को नासिकाग्र पर स्थिर करें। कुछ पल बाद सहज श्वास के साथ सामान्य स्थिति में लौट आएं। यह पांच मिनट करें। इसे मोटे लोग न आजमाएं।

प्रस्तुति – सेवा संवाद | संकलन–शुभि

व्रत-त्योहार, नवम्बर 2019

दिनांक	दिन	व्रत–त्यौहार
2	शनिवार	सूर्यषष्ठी–डालाछठ व्रत सायं अर्घ्य
3	रविवार	डालाछठ प्रायः अर्घ्य, व्रत पारण
4	सोमवार	गोपाष्टमी, दुर्गाष्टमी व्रत
5	मंगलवार	अक्षय नवमी, आँवला नवमी, अयोध्या–मुथरा परिक्रमा
8	शुक्रवार	हरिप्रबोधिनी एकादशी व्रत, तुलसी विवाह, चातुर्मास समाप्त
9	शनिवार	शनि प्रदोष व्रत
10	रविवार	वैकुण्ठ चतुर्दशी व्रत, बारावफात
11	सोमवार	श्री काशी विश्वनाथ प्रतिष्ठा दिवस
12	मंगलवार	स्नान–व्रतादि कार्तिक पूर्णिमा, गुरुनानक जयंती
14	गुरुवार	बाल दिवस, नेहरू जयंती
15	शुक्रवार	गणेश चतुर्थी व्रत चन्द्रोदय राम 8:30
17	रविवार	वृश्चिक संक्रांति दिन 12:34
19	मंगलवार	भैरवाष्टमी व्रत, कालभैरव प्राकट्योत्सव
20	बुधवार	अनुराधा के सूर्य सायं 6:37
22	शुक्रवार	उत्पत्रा एकादशी व्रत–स्मार्त
23	शनिवार	उत्पत्रा एकादशी व्रत–वैष्णव
24	रविवार	प्रदोष व्रत, मास शिवरात्रि व्रत
26	मंगलवार	स्नान–दान–श्राद्ध अमावस्या
27	बुधवार	रूद्र व्रत
28	गुरुवार	चन्द्रदर्शन
30	शनिवार	वैनायकी गणेश चतुर्थी व्रत

26 वाँ पुष्प भाऊराव देवरस स्मृति व्याख्यानमाला सम्पन्न

भाऊराव देवरस की स्मृति में 'पर्यावरणीय संकट और जनजीवन के लिए चुनौतियाँ :

पर्यावरणीय संकट और जनजीवन के लिए चुनौतियाँ विषय पर आयोजित 26 वें व्याख्यान माला कार्यक्रम, रविवार दिनांक 29 सितम्बर 2019 को मावलंकर ऑडिटोरियम, कॉन्स्टिटय्शन क्लब नई दिल्ली में सम्पन्न हुआ। इस कार्यक्रम के मुख्य वक्ता गौतम बुद्ध विश्वविद्यालय के कुलपति श्री भगवती प्रकाश शर्मा जी ने सभा को सम्बोधित करते हुए कहा कि जीव सृष्टि निराली है और इस जीव सृष्टि की विशेषताओं को समझे बगैर पर्यावरण की बात करना ठीक नहीं है। आधुनिक समय में जिस पर्यावरण की चर्चा की जाती है वे वस्तुतः आधारभूत संरचना नहीं है अपितु पृथ्वी, जल और वायु यह आधारभूत संरचनाएं हैं इन आधारभूत संरचनाओं को हमें आगामी पीढ़ी के लिए भी बचा कर रखना है।

पर्यावरण की चिंता करते समय केवल यदि एक ही प्रकार के पौधे लगा दिए गए तो उन पौधों में जो फूल लगेंगे उन फूलों से जो पराग मिलेंगे उनके माध्यम से कुछ ही जीव अपने जीवन को धारण कर सकेंगे अतः जैव विविधता के लिए आवश्यक है कि अलग–अलग प्रकार के पौधे लगाए जाएं उदाहरण के लिए यदि नीम का पौधा केवल लगा दिया जाए। नीम के पौधे के फूल जिस समय देना बंद हो जाएगा उस समय उस के आसपास में रहने वाले जीवों को तितलियों को भंवरों को पराग नहीं मिलेगा तथा वह अपना जीवन चक्र नहीं चला पाएंगे। अलग–अलग प्रकार के पौधों का रोपण करना चाहिए जिससे जीवों

को तितलियों को अलग–अलग समय में अलग–अलग प्रकार के अलग–अलग समय में फूलों के माध्यम से पराग प्राप्त हो।

उन्होंने देश को चेताया कि तापमान में वृद्धि के कारण 1/3 Glaciers पिघल चुके हैं, जिसके परिणाम स्वरूप आने वाले समय में गंगा जैसी विशाल नदियां भी सिकुड़ने लगेंगी, जो अपने आप में जीव मात्र के लिए अस्तित्व का संकट गहरा करेगा। उन्होंने आम जनता से कम से कम कार्बन उत्पन्न करने का आह्वान किया। आने वाली पीढियों के प्रति जिम्मेदारियों का एहसास कराते हुए उन्होंने कहा कि बिजली के अधिकांश उपयोग के बाद हम तो आज बिजली का बिल भर कर पीछा छुड़ा लेंगे लेकिन भावी पीढ़ियों को इसकी भारी कीमत चुकानी होगी।

"जल, धरती, वायु के प्रदूषित होने का मुख्य कारण इंसानो के मन का प्रदूषण है, 21वीं सदी में भारत पर्यावरण रक्षा को लेकर विश्व का प्रतिनिधत्व करेगा" उक्त उद्‌गार भाऊराव देवरस सेवा न्यास द्वारा आयोजित स्मृति व्याख्यान को सम्बोधित करते हुए कार्यक्रम के मुख्य अतिथि श्री गजेंद्र सिंह शेखावत जी ने व्यक्त किये। गजेंद्र सिंह शेखावत ने नई दिल्ली स्थित मावलंकर ऑडिटोरियम, कॉन्स्टिट्यूशन क्लब में भाऊराव देवरस स्मृति व्याख्यान के 26 वें व्याख्यान को सम्बोधित करते हुए कहा कि वेदों के सूत्रों में पर्यावरण संरक्षण की व्याख्या की गई है, जिसका समस्त मानव जाति अगर पालन करे तो निसंदेह ही पर्यावरण संकट से उभरा जा सकता है।

कार्यक्रम में राष्ट्रीय स्वंय सेवक संघ के सह सर–कार्यवाह कृष्ण गोपाल जी न्यास के संस्थापक न्यासी भाई जी भी उपस्थित रहे। करीब 500 पर्यावरण प्रेमी और समिति से जुड़े लोगों की मौजूदगी ने कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई। अनीश किला जी ने कुशल मंच संचालन किया। न्यास के सह सचिव राहुल सिंह जी ने अतिथियों तथा प्रतिभागियों के प्रति आभार एवं धन्यवाद ज्ञापन किया और बाल विद्यार्थियों के द्वारा वन्दे मातरम गीत की प्रस्तुति से कार्यक्रम का समापन हुआ।

ऋग्वेद (1.23.248) **में 'अप्सु अन्तः अमृतं, अप्सु भेषजं** के रूप में जल का वैशिष्ट्य बताया गया है। अर्थात जल में अमृत है, जल में औषधि–गुण विद्यमान रहते हैं। अस्तु, आवश्यकता है कि जल की शुद्धता–स्वच्छता को बनाए रखने की।

लद्दाख आएं, प्लास्टिक न लाएं और अच्छी यादें लेकर जाएं

विवेक सिंह

लद्दाख आएं पर साथ प्लास्टिक न लाएं, वापसी पर कचरा नहीं अच्छी यादों ही छोड़ जाएं लद्दाख की महिलाओं का एक संगठित ग्रुप पर्यटकों के साथ स्थानीय लोगों को इसी संदेश से पर्यावरण संरक्षण के लिए जागरूक कर रहा है। ये महिलाएं नशे के खिलाफ भी मोर्चा खोले हुए हैं। केंद्र शासित प्रदेश बनने पर लद्दाख में पर्यटक की संभावनाएं बढ़ी हैं। ऐसे में हर चेहरे पर खुशी झलकने के साथ मामूली शिकन भी है। इसका कारण पर्यटकों की भारी आमद से प्लाास्टिक से जल स्त्रोत में प्रदूषण का खतरा बढ़ा है तो दूसरा शराबखोरी में वृद्धि हुई। लेह में संगठित हुई वुमेन अलायंस ने पैंगांग झील में पर्यटकों द्वारा फेंके गए कचरे को एकत्रित कर किनारे किया। वुमेन अलांस की सिपाही लेह में जगह–जगह जागरूक कर रही हैं कि वे प्लास्टिक के सामान का इस्तेमाल न करने के साथ कूड़े का सही तरह से निस्तारण करें।

शराब के कारण परिवारों में कलह हो रहा रही : वुमेन अलायंस का नेतृत्व करने वाली मारूप डोल्मा का कहना है कि प्रदूषण भविष्य के लिए खतरा बन रहा है तो शराब लेह के मजबूत पारिवारिक रिश्तों में दरार पैदा कर रही है। हम लोगों को पर्यावरण संरक्षण के बारे मे जागरूक बनाने के साथ ऐसी दुकानों पर धावा बोलती है। जो अवैध रूप से शराब बेचते है। शराब मारपीट, हादसों और दुर्घटनाओं का कारण बनती हैं। लाइसेंस वाली शराब की दुकानें और न खुलें, इसके लिए समाज को जागरूक बनानें और न खुलें,इसके लिए समाज को जागरूक बनाने की मुहिम चलाई है। लेह के चांग्सपा में काफी होटल, लाज बनने के बाद शराब की कोई दुकान नहीं खुली है।

1994 में चंद महिलाओं ने समूह बनाया

वर्ष 1994 में चंद महिलाओं ने मिलकर लेह मे समूह बनाया था। आज यह मजबूत संगठन है, जिससे 100 गांवो की छह हजार से अधिक महिलाओं ने मिलकर लेह को प्रदूषण मुक्त बनाने और कुरीतियां दूर करने की शुरूआत की।

महिलाएं नुक्कड़ नाटक कर पर्यटकों को जागरूक बनाती हैं। 1994 में वुमेन अलायंस के गठन के साथ इन महिलाओं ने लद्दाख में प्लास्टिक के खिलाफ आंदोलन छेड़ दिया था। उसके प्रयासों के कारण लेह में 1998 में प्लास्टिक के इस्तेमाल पर प्रतिबंध लगा था। इसके बाद प्लास्टिक अनेक रूपों में पहुंच रहा है। ऐसे में अब प्रदूषण को रोकने के लिए लोगों को जागरूक करने की मुहिम जारी है। लेह में रोजना 20 टन से अधिक कचरा पैदा होता है।

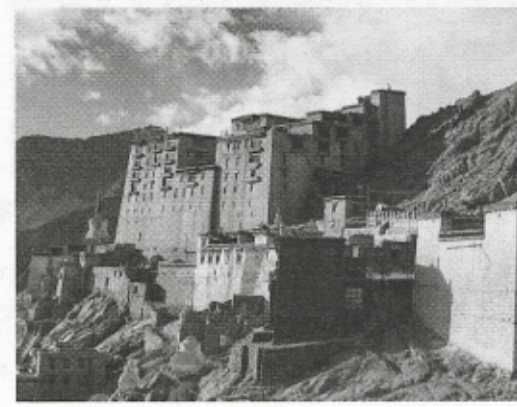

सबका साथ–सबका विकास–सबका विश्वास

"स्वस्थ रहने की पहली शर्त है 'स्वच्छता'। प्रदेश में चलाये गये 'स्वच्छता अभियान' से विषाणुओं से होने वाले अनेक रोगों पर नियंत्रण पाया गया है। आइए, घर एवं कार्यस्थल के आस-पास नियमित सफाई रखकर मच्छर जनित बीमारियों की रोकथाम में अपनी महती भूमिका निभायें।"

– योगी आदित्यनाथ
मुख्यमंत्री, उत्तर प्रदेश

पानी ठहरेगा जहाँ, डेंगू फैलाने वाले मच्छर पनपेंगे वहाँ

मच्छर कहाँ पनपते हैं?

डेंगू एवं चिकुनगुनिया फैलाने वाले मच्छर रुके हुए साफ पानी में पनपते हैं और दिन के समय काटते हैं।

डेंगू से बचाव के लिए उपाय

- मच्छर के काटने से बचें, पूरे बाजू के कपड़े पहनें।
- सप्ताह में एक बार कूलर, फूलदान, पशु व पक्षियों के पानी के बर्तन इत्यादि को खाली कर साफ करें।
- पानी के सभी बर्तन, टंकी इत्यादि को पूरी तरह ढक कर रखें।
- गमलों में पानी जमा न होने दें।
- हमेशा मच्छरदानी का प्रयोग करें।
- पुराने टायर, डिस्पोजल कप, कबाड़ इत्यादि में पानी जमा न होने दें।

यदि तेज बुखार के साथ सिर दर्द/आँखों के पीछे दर्द, जोड़ों और मांसपेशियों में दर्द, त्वचा पर लाल चकत्ते और थकान हो तो तुरन्त अपने नजदीकी अस्पताल/स्वास्थ्य केन्द्र पर जाएं।

अधिक जानकारी के लिए अपने नजदीकी स्वास्थ्यकर्मी/स्वास्थ्य केन्द्र से आज ही सम्पर्क करें।

हमने ठाना है, डेंगू मिटाना है।

दो पहिया वाहन चालक हेलमेट अवश्य पहनें।

राष्ट्रीय वैक्टर जनित रोग नियंत्रण कार्यक्रम, स्वास्थ्य सेवा महानिदेशालय, उ0प्र0

सबका साथ–सबका विकास–सबका विश्वास

स्वच्छ भारत

स्वच्छता ही सेवा

स्वच्छ प्रदेश बनाना है
हर घर से प्लास्टिक हटाना है

15 अगस्त, 2018 से उत्तर प्रदेश के नगर पंचायत, नगर पालिका, नगर निगम या राज्य की औद्योगिक नगरी के आने वाले क्षेत्रों में एक बार उपयोग के पश्चात् निस्तारण योग्य (डिस्पोजबल) कपों, गिलासों, प्लेटों, चम्मचों, टंबलरों के उपयोग, विनिर्माण, विक्रय, वितरण, भण्डारण, परिवहन, आयात या निर्यात को प्रतिषिद्ध किया गया है।

BANNED
प्रतिबंधित
BANNED

2 अक्टूबर, 2018 से उत्तर प्रदेश के नगर पंचायत, नगर पालिका, नगर निगम या राज्य की औद्योगिक नगरी के आने वाले क्षेत्रों में समस्त प्रकार के निस्तारण योग्य प्लास्टिक कैरी बैगों के उपयोग, विनिर्माण, विक्रय , वितरण, भण्डारण, परिवहन, आयात या निर्यात को प्रतिषिद्ध किया गया है।

उक्त प्रतिबंध का उल्लंघन दण्डनीय अपराध है

प्रतिषिद्ध श्रेणी के निस्तारण योग्य पॉलिथीन कैरी बैगों, प्लास्टिक और थर्मोकोल वस्तुओं की मात्रा	धनराशि (रुपयों में)
100 ग्राम तक	1,000
101 ग्राम–500 ग्राम	2,000
501 ग्राम–1 किलोग्राम	5,000
1 किलोग्राम–5 किलोग्राम	10,000
5 किलोग्राम से अधिक	25,000

किसी संस्था/ वाणिज्यिक संस्था /पाणिज्यिक प्रतिष्ठान/शैक्षिक संस्थाओं/ कार्यालयों/ होटलों/ दुकानों/रेस्तराओं/मिष्ठान दुकानों/ ढाबों/ औद्योगिक प्रतिष्ठानों/ भोजन कक्षों आदि द्वारा परिसर के अंतर्गत और सड़कों, मार्गों, नालों, नदियों, झीलों, तालाबों, वन क्षेत्रों, सार्वजनिक पार्कों, समस्त सार्वजनिक स्थलों आदि पर प्लास्टिक अपशिष्ट का फेंका जाना। रु० 25,000

व्यक्तियों द्वारा किन्हीं निजी या वाणिज्यिक प्रतिष्ठानों यथा शैक्षिक संस्थाओं/ कार्यालयों /होटलों/ दुकानों/ रेस्तराओं/मिष्ठान दुकानों/ढाबों/ औद्योगिक प्रतिष्ठानों/भोजन कक्षों आदि में और सड़कों, मार्गों, नदियों, झीलों, सार्वजनिक पार्कों, वन क्षेत्रों और समस्त सार्वजनिक स्थानों आदि पर प्लास्टिक अपशिष्ट का फेंका जाना। रु० 1,000

जुर्माने के साथ-साथ सजा का भी प्रावधान है

- जो कोई प्रतिबंधित सामग्री [प्लास्टिक कैरी बैग/प्लास्टिक या थर्मोकोल से निर्मित एक बार उपयोग पश्चात् निस्तारण योग्य (डिस्पोजबल) कपों, गिलासों, प्लेटों, चम्मचों, टंबलरों] का उपयोग करता है या उपयोग करने हेतु दुष्प्रेरित करता है, प्रथम दोष सिद्धि की स्थिति में ऐसी अवधि के कारावास के साथ, जो एक माह तक हो सकती है या ऐसे जुर्माने के साथ जो एक हजार रुपये से कम नहीं होगा और दस हजार रुपये तक हो सकता है और द्वितीय या अनुवर्ती दोष सिद्धि की स्थिति में ऐसी अवधि के कारावास के साथ जो छः मास तक हो सकती है या ऐसे जुर्माने के साथ जो पांच हजार रुपये से कम नहीं होगा और जो बीस हजार रुपये तक हो सकता है, दण्डित किया जावेगा।
- जो कोई प्रतिबंधित सामग्री [प्लास्टिक कैरी बैग/प्लास्टिक या थर्मोकोल से निर्मित एक बार उपयोग पश्चात् निस्तारण योग्य (डिस्पोजबल) कपों, गिलासों, प्लेटों, चम्मचों, टंबलरों] का विनिर्माण, विक्रय, वितरण, भण्डारण, परिवहन, आयात या निर्यात करेगा अथवा विनिर्माण, विक्रय, वितरण, भण्डारण, परिवहन, आयात या निर्यात के लिए दुष्प्रेरित करेगा, प्रथम दोष सिद्धि की स्थिति में ऐसी अवधि के कारावास के साथ, जो छः माह तक हो सकती है या ऐसे जुर्माने के साथ जो दस हजार रुपये से कम नहीं होगा और जो पचास हजार रुपये तक हो सकता है, और द्वितीय या अनुवर्ती दोष सिद्धि की स्थिति में ऐसी अवधि के कारावास के साथ जो एक वर्ष तक हो सकती है या ऐसे जुर्माने के साथ जो बीस हजार रुपये से कम नहीं होगा और जो एक लाख रुपये तक हो सकता है, दण्डित किया जायेगा।

हम सबने यह ठाना है, यू० पी० स्वच्छ बनाना है

यही है हमारा संकल्प इस्तेमाल करेंगे पॉलिथीन का विकल्प

उक्त प्रतिबंध को प्रभावी करने हेतु निम्न अधिकारी अपने क्षेत्राधिकार में नामित किये गये हैं :-

- समस्त जिला मजिस्ट्रेट, अपर जिला मजिस्ट्रेट और परगना मजिस्ट्रेट, उत्तर प्रदेश।
- उत्तर प्रदेश के नगरीय स्थानीय निकायों के समस्त नगर आयुक्त, अपर नगर आयुक्त, कार्यपालक अधिकारी, क्षेत्रीय अधिकारी, सफाई निरीक्षक (क्रमशः नगर आयुक्त और अधिशासी अधिकारियों) की अनुज्ञा से।
- सचिव, राज्य प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड, समस्त पर्यावरण अभियन्ता, वैज्ञानिक अधिकारी, सहायक पर्यावरण अभियन्ता, सहायक वैज्ञानिक अधिकारी, अवर अभियंता और वैज्ञानिक सहायक, राज्य प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड, उत्तर प्रदेश।
- निदेशक पर्यावरण, उप निदेशक पर्यावरण और सहायक निदेशक पर्यावरण, उत्तर प्रदेश।
- समस्त मुख्य चिकित्सा अधिकारी और चिकित्सा अधिकारी, उत्तर प्रदेश।
- समस्त उप/सहायक श्रम एवं रोजगार अधिकारी, उत्तर प्रदेश।
- समस्त प्रभागीय वन अधिकारी, उप प्रभागीय अधिकारी और क्षेत्रीय अधिकारी, उत्तर प्रदेश।
- समस्त तहसीलदार और नायब तहसीलदार, उत्तर प्रदेश।
- समस्त पर्यटन अधिकारी और सहायक पर्यटन अधिकारी, उत्तर प्रदेश।
- समस्त जिला पूर्ति अधिकारी और खाद्य निरीक्षक, उत्तर प्रदेश।
- समस्त खाद्य एवं सुरक्षा निरीक्षक, उत्तर प्रदेश।
- उत्तर प्रदेश के औद्योगिक विकास प्राधिकरणों के सहायक प्रबंधक, अवर अभियन्ता और उससे ऊपर के अधिकारियों की श्रेणी के समस्त अधिकारी।

स्वच्छ भारत मिशन (नगरीय), नगर विकास विभाग, उत्तर प्रदेश

टोल फ्री : 1800 1800 101

मुद्रक एवं प्रकाशक : श्री जितेन्द्र कुमार अग्रवाल द्वारा भाऊराव देवरस न्यास, सी–91, निरालानगर, लखनऊ (उ.प्र.) के लिए बर्फानी इण्टरप्राइजेज, ए–1, गोविन्दा बिल्डिंग, शाहनजफ रोड, हजरतगंज, लखनऊ, से मुद्रित। सम्पादक : डॉ शिवभूषण त्रिपाठी